

देशबन्धु

वर्ष - 8 | अंक-236 | सागर, रविवार, 15 अक्टूबर 2023 | पृष्ठ - 8 | मूल्य - 3.00 रुपए

खाद्य विभाग ने 6 घंटे गैस सिलेंडर और खुले में पेट्रोल बेचने वाली का पेट्रोल जल कर की कार्यवाही

पृष्ठ 2

गांधीजी की शॉल
महमूद दरवेश की दो कविताएं

पृष्ठ 4

इजराइल-हमास युद्ध में फंसी टीकमगढ़ की
बेटी की सुरक्षित वतन वापसी

पृष्ठ 6

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने की
संभाग में चुनाव तैयारियों की समीक्षा

पृष्ठ 8

विश्व कप : भारत ने पाकिस्तान को 7 विकेट से दी शिकस्त



रोहित-अखर का अर्धशतक
बुमराह बने मैन ऑफ द मैच

मोदी और शिवराज ने दी बधाई

भारत बनाम पाकिस्तान मैच में भारत की शानदार जीत पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बधाई दी है। श्री मोदी ने भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन को शानदान बताते हुए सभी खिलाड़ियों को अगले मैचों के लिए शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भारतीय क्रिकेट टीम को बधाई दी है। केन्द्रीय खेल एवं युवा मामलों के मंत्री अनुराग ठाकुर ने भी भारतीय टीम को बधाई दी है।

छह बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं छू सके। सऊद शकील छह, मोहम्मद नवाज चार, इफ्तखार अहमद चार, शादाख खान दो और हारिस रऊफ दो रन बनाकर आउट हो गए। टीम इंडिया के लिए पांच गेंदबाजों ने दो-दो विकेट लिए। जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, हार्दिक पांड्या, कुलदीप यादव और रवींद्र जडेजा ने दो-दो विकेट लिए। गेंदबाजी करने वालों में सिर्फ शारुल ठाकुर ही ऐसे रहे जिन्हें एक भी सफलता नहीं मिली। बुमराह को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

अहमदाबाद, एजेंसी। भारत ने विश्व कप के 12वें मैच में पाकिस्तान को सात विकेट से शिकस्त दी। भारत ने टूर्नामेंट में लगातार तीसरी जीत हासिल की है। उसने ऑस्ट्रेलिया और अफगानिस्तान के खिलाफ अब अपने चिर प्रतिद्वंद्वी को भी हरा दिया। उसके तीन मैचों में अब छह अंक हो गए हैं। टीम इंडिया का अगला मुकाबला 19 अक्टूबर को बांग्लादेश से पुणे में होगा। वहीं, पाकिस्तान की टीम 20 तारीख को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बंगलूरु में खेलेगी।

अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में भारत के कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। पाकिस्तान की टीम 42.5 ओवर में 191 रन पर सिमट गई। जवाब में भारत ने 30.3 ओवर में तीन

विकेट पर 192 रन बनाकर मैच को अपने नाम कर लिया। टीम इंडिया ने विश्व कप इतिहास में पाकिस्तान के खिलाफ अपने जीत का क्रम जारी रखा। उसको यह आठवीं जीत है। अब तब भारत उसके खिलाफ इस टूर्नामेंट में नहीं हारा है। कप्तान रोहित शर्मा ने 86 रन की शानदार पारी खेली। वहीं, जसप्रीत बुमराह ने सात ओवर में 19 रन देकर दो विकेट लिए। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

इससे पहले पाकिस्तान के लिए कप्तान बाबर आजम ने सबसे ज्यादा 50 रन बनाए। पिछले मैच में शतक लगाने वाले मोहम्मद रिजवान इस बार अर्धशतक से चूक गए। वह 49 रन पर पवेलियन लौट गए। इमाम उल हक ने 36, अब्दुल्ला शफीक ने 20 और हसन अली ने 12 रन बनाए। इनके अलावा



भारत और श्रीलंका के बीच नौका सेवा शुरू

चेन्नई, एजेंसी। भारत एवं श्रीलंका के बीच तमिलनाडु के नागापट्टिनम से श्रीलंका के उत्तरी प्रांत जाफना के पास कांकेसंतुराई तक यात्री नौका सेवा शनिवार से प्रारंभ हो गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को राष्ट्रीय राजधानी से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के

जरीफ इस सेवा की शुरुआत की। नौका तमिलनाडु के नागापट्टिनम बंदरगाह से द्वीप राष्ट्र श्रीलंका में कांकेसंतुराई के लिए रवाना हुई। उन्होंने कहा कि

भारत और श्रीलंका संस्कृति, वाणिज्य और सभ्यता का गहरा इतिहास साझा करते हैं और अब दोनों में आर्थिक साझेदारी भी बढ़ेगी। नौका सेवा नागापट्टिनम और कांकेसंतुराई के बीच शुरू की गई है। इसमें 150 लोग बैठ सकेंगे।

भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इसे अच्छी शुरुआत बताया। साथ ही कहा कि हमारा फोकस कनेक्टिविटी, कोऑपरेशन और कॉन्टेक्ट्स पर है। यह हमारी पड़ोसी फर्स्ट पॉलिसी का हिस्सा है। भविष्य में हमारा ग्लोबल कनेक्शन, पाइपलाइंस और इकोनॉमिक कॉरिडोर का भी प्लान है। फेरी का शुरू होना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और श्रीलंकाई पीएम रानिल विक्रमसिंघे की सकातत्मक कोशिशों का ही परिणाम है। इसी साल जुलाई में ही दोनों देशों के नेताओं ने इस पर सहमति जता दी थी।

ऑपरेशन अजय : इजराइल से 235 भारतीयों को लेकर आई दूसरी उड़ान



2 दिनों में 447 भारतीयों को वापस लाया गया

नई दिल्ली, एजेंसी। इजरायल के तेल अवीव से ऑपरेशन अजय के तहत 235 भारतीय नागरिकों को लेकर दूसरी चार्टर उड़ान शनिवार सुबह राष्ट्रीय राजधानी पहुंची। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि 'ऑपरेशन अजय' के तहत दो दिनों में 447 भारतीयों को भारत वापस लाया गया है।

तेल अवीव से दूसरी उड़ान 235 नागरिकों को लेकर कल रात रवाना हुई थी। केन्द्रीय मंत्री राजकुमार रंजन सिंह ने आज सुबह हवाईअड्डे से बाहर निकल रहे सभी 235 भारतीय नागरिकों का गर्मजोशी से स्वागत किया। इजराइल ने आज सुबह हवाईअड्डे से बाहर निकल रहे सभी 235 भारतीय नागरिकों का गर्मजोशी से स्वागत किया। इजराइल ने आज सुबह हवाईअड्डे से बाहर निकल रहे सभी 235 भारतीय नागरिकों का गर्मजोशी से स्वागत किया। इजराइल ने आज सुबह हवाईअड्डे से बाहर निकल रहे सभी 235 भारतीय नागरिकों का गर्मजोशी से स्वागत किया।

इजराइल में रह रहे 18 हजार भारतीय

इजराइल में भारतीय राजदूत संजीव सिंगला ने भारतीय नागरिकों को सुरक्षित वापसी का आश्वासन दिया। इजरायल में फंसे करीब 18,000 भारतीयों को वापस लाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए 'ऑपरेशन अजय' में दूतावास की सहायता और नागरिकों के लिए एक हेल्पलाइन स्थापित की गई है।

212 यात्रियों के साथ पहली उड़ान दिल्ली पहुंची थी। सभी यात्रियों ने भारत सरकार का आभार व्यक्त किया और 'बंदे मातरम' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाए।

इजराइल पर हमले का कमांडर मारा गया

तेल अवीव, एजेंसी। इजराइल और हमास की जंग के आठवें दिन इजराइली सेना ने बताया है कि उन्होंने 7 अक्टूबर को इजराइल पर हुए हमले को लीड करने वाले कमांडर अली कादी को मार गिराया है। अली कादी को मारने का काम इजराइल की इंटरनल इंटेलिजेंस एजेंसी शिन बेत ने किया है। आज सेना के हमले में मारा जाने वाला ये हमास का दूसरा कमांडर है। इसके पहले हमास का एयरफोर्स कमांडर मार गया था।

24 घंटे में 320 लोगों की मौत

वहीं, इजराइल ने रात भर गाजा पर बम बरसाए। इससे वहां 24 घंटे में 320 लोगों की मौत हुई है। इजराइल ने गाजा की तरफ वाटर और इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई को रोक दिया था। इससे वहां पानी खत्म होने की कगार पर है। संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि इससे 20 लाख लोगों की जिंदगी दांव पर लगी है।

इजराइल की सेना ने गाजा सिटी में रेड की थी। ये रेड उन इलाकों में की गई थी, जहां हमास ने इजराइल के 150 बंधकों को रखा था। वहां इजराइली सैनिकों को कई लाशें और कुछ सामान मिला है। जो हमास के बंधकों और उन लोगों का बताया गया है जो 7 अक्टूबर को हुए हमले के बाद से लापता थे।

मुख्यमंत्री ने कहा- बहनें रहें सावधान

कांग्रेस की नीयत लाइली बहना योजना बंद करने की

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि कांग्रेस ने जिस प्रकार पहले भाजपा सरकार की जनकल्याण योजनाओं को बंद कर दिया था, उसी तरह अब इनकी नीयत लाइली बहना योजना को बंद करने की है बहनों को बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है।



श्री चौहान ने आज कहा कि कांग्रेस अब लाइली बहना योजना बंद करने की तैयारी कर रही है, कांग्रेस के लोग ट्वीट कर रहे हैं कि मामा चुपके से पैसा डालेगा। उन्होंने कहा कि ये एक चलती हुई योजना है, जिसे बंद नहीं किया जा सकता। ये योजना नहीं, एक करोड़ 32 लाख बहनों का भाग्य है। भाजपा सरकार उसके पैसे खलेगी, तो कांग्रेस को तकलीफ क्यों हो रही है। उन्होंने कहा कि ये बात सही है कि चुनाव में कोई कार्यक्रम करके महिलाओं के खाते में पैसे नहीं डाल सकते, पर पैसे तो खले जाएंगे। कांग्रेस की नीयत साफ हो गई है, जैसे उन्होंने अपनी सरकार आते ही कन्याओं के विवाह बंद कर दिए, संबल योजना बंद कर दी, गरीब आदिवासी महिलाओं के खाते में जाने वाले पैसे बंद कर दिए, वैसे ही कांग्रेस अब लाइली बहना योजना बंद करने की तैयारी कर रही है।

भाजपा आदिवासियों को सम्मान और सामान दोनों देगी

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार आदिवासियों के पांव में चप्पल पहना रही है तो कांग्रेस के सीने में तकलीफ हो रही है। इसलिए उन्होंने प्रदेश में सरकार में आते ही आदिवासियों को जूते, चप्पल, पानी की कुप्पी और साड़ी देना भी बंद कर दिया था। श्री चौहान ने कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को लेकर कहा कि ये दोनों सुन लें, भाजपा आदिवासियों को सम्मान और सामान दोनों देगी, क्योंकि भाजपा के दिल में तेंदूपत्ता तोड़ने वालों के लिए जगह है। श्री चौहान ने आज वीडियो संदेश जारी करते हुए कहा कि कांग्रेस ने हमेशा आदिवासियों को अपमानित करने का काम किया है। भाजपा ने आदिवासी जननायकों टंट्या मामा, भीमा नायक, रानी दुर्गावती, बिरसा मुंडा जैसे जननायकों का स्मरण करते हुए स्मारक बनवाए, लेकिन कांग्रेस ने केवल एक खानदान के स्मारक बनाए।

कमलनाथ बोले-

भाजपा को विपक्ष में बैठा कर कांग्रेस को मौका देगी जनता

भोपाल, देशबन्धु। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा कि प्रदेश में लोकतंत्र के महायज्ञ में सबको जनता की कसौटी पर खरा

उतरना है और जनता अब मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को विपक्ष में बैठा कर कांग्रेस को काम करने का मौका देने वाली है। कमलनाथ ने एक्स पर पोस्ट पर मुख्यमंत्री से कहा कि जनता के बीच जाने के बजाय आप चोरी-चोरी, चुपके-चुपके का खेल खेल रहे हैं। जिन योजनाओं को आपने कभी चालू ही नहीं किया, उन्हें बंद करने की क्या बात करना। उन्होंने दावा किया कि डेढ़ महीने बाद प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनेगी जो नारी सम्मान योजना लेकर आ रही है, जिसके अंतर्गत महिलाओं को 1500 रुपए प्रतिमाह और 500 रुपए में गैस सिलेंडर मिलना है। 100 यूनिट तक बिजली माफ और 200 यूनिट तक बिजली आधी कीमत पर मिलनी है। बच्चों की पढ़ाई फ्री होनी है। सरकारी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन मिलनी है। किसानों का कर्ज माफ होना है।

अरिवल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान का दावा

कोरोना की दूसरी लहर में हुई 12 गुना ज्यादा मौतें

- 61.1 फीसदी मृतक पुरानी बीमारी से थे ग्रसित
- दूसरी लहर में भती 20.3 फीसदी मरीजों की मौत
- पहली लहर के दौरान 2.4 फीसदी मरीजों की मौत

नई दिल्ली, देशबन्धु। कोरोना की दूसरी लहर कितनी मारक थी इसको लेकर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ने चौकाने वाली जानकारी दी है। संस्थान के चिकित्सकों के एक अध्ययन में दावा किया गया है कि कोरोना की दूसरी लहर इसकी पहली लहर की तुलना में कहीं ज्यादा घातक थी और इस दौरान 12 गुना ज्यादा मौतें हुई थीं। अध्ययन में कहा गया है कि कोरोना की दूसरी लहर में 61.1 फीसदी मृतकों को कोई पुरानी बीमारी थी। मतलब बड़ी संख्या में ऐसे लोगों की भी जान गई जिन्हें कोई बीमारी नहीं थी। हाल ही में क्यूरियस जर्नल ऑफ

मेडिसिन में छपे इस अध्ययन में बताया गया कि कोरोना के दौरान एम्स ने राष्ट्रीय कैंसर संस्थान को कोविड अस्पताल बनाया था और कोरोना की पहली लहर मार्च 2020 से दिसम्बर 2020 के बीच इस अस्पताल में 6233 और अप्रैल 2021 से जून 2021 के बीच 2080 मरीज भर्ती हुए थे। पहली लहर के दौरान 2.4 फीसदी मरीजों की मौत हुई। जबकि दूसरी लहर के दौरान 20.3 फीसदी मरीजों की मौत हुई। पहली लहर में कोरोना तकरीबन डेढ़ फीसदी मरीजों की मौत का कारण बना था। जबकि दूसरी लहर में सह 17.7 फीसदी मरीजों की मौत का कारण बना। अध्ययन में दावा किया

42.8 फीसदी को ऑक्सीजन की जरूरत पड़ी

इसके अलावा कोरोना की पहली लहर में महज 9.6 फीसदी मरीजों को ऑक्सीजन की जरूरत पड़ी थी। जबकि दूसरी लहर के दौरान 42.8 फीसदी मरीजों को ऑक्सीजन की जरूरत पड़ी। यानि दूसरी लहर में तकरीबन साठे गुना ज्यादा मरीजों को ऑक्सीजन की जरूरत पड़ी।

गया है कि कोरोना की पहली लहर में 90.4 फीसदी मृतकों को कोरोना के अलावा दूसरी गंभीर बीमारी भी थी। लेकिन दूसरी लहर में 61.1 फीसदी मृतकों को ही अन्य गंभीर भी बीमारी भी थी। यानि बड़ी संख्या में ऐसे लोगों की भी मौत जिन्हें पहले कोई बीमारी नहीं थी।

आपके दूधपेस्ट में क्या है?

झूठ

दूधपेस्ट के नाम पर आज तक झूठपेस्ट किया और नतीजा ये हुआ कि दाँतों की सफाई तो मिली नहीं, केमिकल की मार ने कर दिये दाँत व मसूड़े अत्यन्त खराब।

पतंजलि दन्त कान्ति में है सदियों से आजमाया

आयुर्वेद का सच

तभी तो यह कहलाता है

Truthpaste

यह बना है 16 पावरफुल जड़ी-बूटियों (अकरकसा, नीम, बबूल, तोमर, पुदीना, लौंग, पीपली (ओटी), वज्रदन्ती, बकूल, विडंग, हल्दी, पीलू, माजूफल आदि) से, जो दाँतों को दे कैविटी, दुर्गंध, पीलापन, पायरिया व समस्त बीमारियों से लड़ने की भरपूर शक्ति।

सार-समाचार

बुलेटों में भरकर ले जा रहे थे अवैध सागौन, वन अमले ने पकड़ी



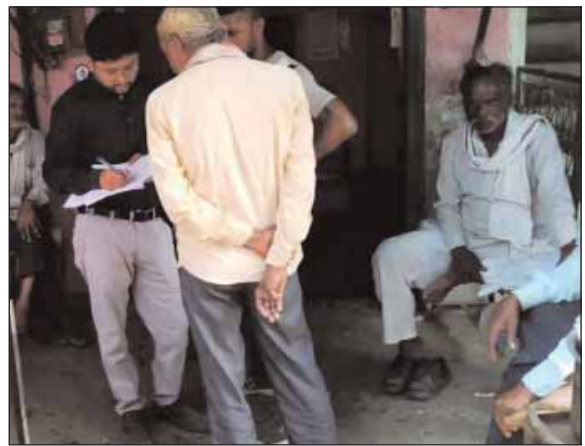
सागर, देशबन्धु। देवरी वन परिक्षेत्र के महाराजपुर अंतर्गत मुखबिर् की सूचना पर वन विभाग की टीम और महाराजपुर पुलिस की संयुक्त कार्यवाही में एक बोलोरो क्रमांक एमपी 20 सीसी 0356 में अवैध रूप से सागौन के लट्टे भरकर ले जाने की सूचना वन विभाग को प्राप्त हुई थी। जिस पर शुक्रवार की रात्रि करीब 10.30 बजे वन विभाग की टीम और पुलिस टीम ने घेराबंदी कर महाराजपुर के मढपपरिया तिराहे पर बोलोरो को पकड़ा जिसमें सागौन के छह नग 0.190 घन मीटर लकड़ी जिसकी कीमत 10 हजार बताई जा रही है। जिसमें एक आरोपी कैस कुमार आदिवासी निवासी मोरिया जमुनिया को पकड़ा गया है। जिससे पूछताछ की जा रही है कि यह लकड़ी मोरिया जमुनिया से महाराजपुर किसके यहां ले जाई जा रही थी। कार्यवाही के दौरान देवरी वन परिक्षेत्र अधिकारी राघवेंद्र भदोरिया, महाराजपुर थाना प्रभारी मिनेश भदोरिया और वन विभाग और पुलिस का अमला मौजूद रहा।

मतदाता जागरूकता हेतु मेहेंदी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन



बीना, देशबन्धु। विधानसभा क्षेत्र बीना में स्वीप प्लान के अंतर्गत मतदाता जागरूकता हेतु पीएम केंद्रीय विद्यालय में मेहेंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भागीदारी की। प्राचार्य अशोक कुमार सारस्वत ने कहा कि विद्यार्थी मतदाता जागरूकता के लिए सक्रिय रहें। कार्यक्रम का संचालन राजेश यादव ने किया। मेहेंदी प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग में प्रथम निदा खान, द्वितीय दिशा घाबरिया एवं तृतीय स्थान निर्यति तिवारी ने प्राप्त किया। वरिष्ठ वर्ग में प्रथम आर्या जैन, द्वितीय संस्कृति लोधी एवं तृतीय स्थान सृष्टि शर्मा एवं दामिनी रजक ने प्राप्त किया। इस अवसर पर श्वेता गिल, डॉ. कविता त्रिपाठी, अखिलेश कुमार जैन, अंकित मिश्रा, गरिमा सिंह, कैलाश केसरवानी सहित विद्यालय स्टाफ एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

खाद्य विभाग ने 6 घरेलू गैस सिलेंडर और खुले में पेट्रोल बेचने वालों का पेट्रोल जब्त कर की कार्यवाही



संकल्प और साधना सोच को सफल बनाती है: मणीकांत चौबे

सागर, देशबन्धु। बुंदेलखंड हिंदी साहित्य संस्कृति विकास मंच की ऑनलाईन 178 वीं साप्ताहिक संगोष्ठी संयोजक मणीकांत चौबे के संयोजकत्व तथा अध्यक्षता में श्रेष्ठ काव्य धारा प्रवाहित हुई। गोष्ठी के पूर्व संचालक डॉ. नलिन जैन ने संचालन शुरू करते हुए, सागर से कवि पून सिंह राजपूत को वंदना के लिए आमंत्रित किया और गोष्ठी प्रारंभ हुई। स्वागत भाषण में लक्ष्मी नारायण चौरसिया ने 1500 क्रम की संगोष्ठी की ऐतिहासिक यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा दिसंबर 1995 के अंतिम सप्ताह की संगोष्ठी में प्रति शनिवार संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया गया था, तब से आज तक आयोजन बिना किसी रुकावट के प्रति सप्ताह होता आ रहा है। इस निरंतर आयोजन का श्रेय मणीकांत चौबे बेलिहाज को ही जाता है। मणीकांत चौबे ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा व्यक्ति के संकल्प और साधना, सोच को सफल बनाती है। हिंदी साहित्य क्षेत्र में बिना किसी रुकावट, प्रति सप्ताह संगोष्ठी आयोजित करते हुए 1500 क्रम तक पहुंचने का संभवतः यह देश में, प्रथम प्रयास होगा। संस्था के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष कृष्णकांत बखशी ने 1500 क्रम की गौरवशाली संगोष्ठी आयोजित होने का श्रेय मणीकांत चौबे बेलिहाज को देते हुए, ऐसे आयोजन को देश के साहित्य जगत का अभिनव आयोजन बताते हुए, शासन से निवेदन किया कि आयोजक मणीकांत चौबे को शासन के द्वारा पद्मश्री नागरिक सम्मान से विभूषित किया जाना चाहिए। इस गोष्ठी में विभिन्न प्रांतों से आमंत्रित कवियों ने काव्य की विभिन्न प्रस्तुतियां दीं। संगोष्ठी में साहित्य मनीषी व प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे और कवियों का उत्साह वर्धन किया और गोष्ठी के संचालक डॉ. नलिन जैन ने आभार व्यक्त किया।



सागर, देशबन्धु। दादा दरबार मंदिर में पुरखों की विदाई हजारों की संख्या में दीप जलाये गये।

शांति समिति की बैठक सम्पन्न

बीना, देशबन्धु। थाना बीना में शनिवार को आगामी त्योहार नवदुर्गा उत्सव एवं दशहरा को देखते हुए नवदुर्गा समिति अध्यक्ष, डॉ. टंट वालो एवं अखाड़े वालों की शांति समिति की बैठक ली गई। जिसमें नागरिक, एसडीएम बीना देवेन्द्र सिंह, एसडीओपी प्रशांत सिंह सुमन, थाना प्रभारी बीना निरीक्षक भरत सिंह ठाकुर सीएमओ नगर पालिका बैठक में उपस्थित रहे, सभी को शांति पूर्वक त्योहार मनाने एवं आदर्श आचार संहिता का पालन करने की समझाया दी।

एनएसएस के छात्रों ने नुककड़ नाटक कर लोगो से मतदान की अपील की



खुरई, देशबन्धु। मप्र विधानसभा चुनाव को लेकर तक्षशिला हायर सेकेण्डरी स्कूल के राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र-छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूक रैली निकालकर तहसील परिसर पर झंडा चौक पर नुककड़ नाटक का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने सारे काम छोड़ दो सबसे पहले बोट दो, देश के विकास में दे अपना योगदान, हर हाल में करना अपना मतदान, लोकतंत्र का करो सम्मान, शत प्रतिशत करो मतदान जैसे नारे लगाए। सभी मतदाताओं से 17 नवंबर को मतदान केंद्र जाकर अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील की, साथ ही मतदान के लिए शपथ दिलाई। नुककड़ नाटक में सभी को निर्भीक एवं निष्पक्ष होकर स्वतंत्रता पूर्वक बिना प्रलोभन के चुनाव में अपने मत का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम अधिकारी नीलेश मोघे ने कहा कि आप लोग ही भारत के भविष्य हो, भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है, कई मतदाता पहली बार अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे, अपनी चुनी हुई सरकार ही आपका भविष्य बनाएगी। मतदान के दिन बड़-चड़कर हिस्सा लेने व अपने परिवार, आपस के लोगों को निर्वाचन के लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर नायब तलसीलदार रमेश चंद कोष्ठी, नोडल अधिकारी डॉ. विनोद राय, प्रभारी लाखन सिंह, दीपक नामदेव सहित अन्य बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

स्वरोजगार स्थापित करने के लिए इच्छा शक्ति को प्रबल करने की आवश्यकता है: सुनीता अरिहंत



सागर, देशबन्धु। विचार समिति और क्रेस्ट एलाइंस संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में विचार कार्यालय में मोहल्ला विकास से जुड़ी महिलाओं के लिए स्वरोजगार स्थापित करने के लिए जागरूक किया गया। विचार समिति की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा कि समिति का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। खुद का व्यवसाय करने के लिए हमें इच्छा शक्ति को प्रबल करने की आवश्यकता है। दुनिया का कोई भी काम असंभव नहीं है बस बात इतनी है कि जो काम जितना कठिन होगा उसमें उतनी ही अधिक मेहनत करनी होगी।

क्रेस्ट एलाइंस से आनलाइन माध्यम से पल्लवी, अल्पन, रोशनी ने अपने विचार रखते हुए खुशी व्यक्त की कि आपने अपना व्यवसाय शुरू किया है। प्रभा साहू ने उपस्थित महिलाओं को बताया कि हम पहले सोचते थे कि हम अपना व्यवसाय स्थापित करें लेकिन कैसे करें। जब विचार समिति से जुड़े तो समिति द्वारा स्वरोजगार की ट्रेनिंग दी गई जिस कारण आज हम ब्यूटी पार्लर सफलता पूर्वक चला रहे हैं। अनिता चौधरी बुटिक और जनरल स्टोर का व्यवसाय कर रही हैं। उन्होंने बताया कि मैं पढ़ी लिखी नहीं हूँ। मेरे घर वाले कहते थे कि तुम नहीं कर पाओगी लेकिन मैं समिति के माध्यम से स्वरोजगार की ट्रेनिंग लेकर आज अपना व्यवसाय चला रही हूँ। ज्ञातव्य हो कि क्रेस्ट एलाइंस संस्थान ने अप्रैल माह में विचार मोहल्ला विकास से जुड़ी 7 महिलाओं को चयनित कर स्वरोजगार को बढ़ाने के लिए सिलाई, ब्यूटी पार्लर, जनरल स्टोर, कपड़े की दुकान आदि स्थापित करने के लिए 15000 रुपये की राशि दी गई थी। स्वावलंबी भारत अभियान के पूर्णकालिक कार्यकर्ता रविन्द्र ठाकुर ने स्वरोजगार हेतु योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर पूजा प्रजापति, उर्मिला अहिरवार, सरिता पटेल, द्रौपती पटेल, रेखा पटेल, मंजू रैकवार, सपना गौड़, कल्पना पटेल, किरन अहिरवार आदि महिलाएं उपस्थित थीं।

ज्ञानवीर आईटीआई व नर्सिंग के मध्य हुआ खेल प्रतियोगिता का आयोजन



सागर, देशबन्धु। म.प्र में खेले इंडिया यूथ गोम्स के तहत ज्ञानवीर आईटीआई एवं ज्ञानवीर नर्सिंग के मध्य रोमांचक क्रिकेट खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दोनों के बीच कड़ा मुकाबला हुआ जिसके तहत प्रथम पाली में आईटीआई की टीम ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का निर्णय लिया जिसमें आईटीआई की टीम प्रथम पारी में बैटिंग के दौरान 12 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 174 रन का लक्ष्य रखा इसके जवाब में नर्सिंग द्वारा 12 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 141 रन बनाए गए जिसमें ज्ञानवीर आईटीआई विजेता रही। प्रतियोगिता के दौरान संस्था प्रमुख नीतेश प्रजापति व मुख्य अतिथि पूर्वा जैन प्रशिक्षण अधीक्षक सियाराम सिंह ने विजेता को पुरुष्कार प्रदान कर उन्हें बधाईयां प्रेषित की। इस दौरान समस्त स्टाफ व छात्र उपस्थित रहे।

दुखी व्यक्ति को देखकर उसके दुख को दूर करने की भावना प्रत्येक व्यक्ति के अंदर होना चाहिए: मुनिश्री



मकरोनिया, देशबन्धु। देव शास्त्र गुरु पर सच्ची श्रद्धा करके आस्तिक बनो, नास्तिक नहीं, यह बात मुनिश्री सुदत्तसागर ने अंकुर कॉलोनी स्थित श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में धर्म सभा को संबोधित करते हुए कही मुनि श्री ने बताया प्रथम, अनुकंपा, संवेग, आस्तिक्य यह चार गुण सम्यक दृष्टि जीव के होते हैं। मोक्ष मार्ग हो या संसार मार्ग पर यदि कोई अज्ञानता के कारण, कर्मोदय से दुख पा रहा है, तो उसका दुख दूर कैसे हो इस प्रकार की सद्भावना प्रत्येक व्यक्ति के अंदर होनी चाहिए। दूसरे के दुख को देखकर दुखित होना सम्यक दृष्टि का लक्षण है। कुछ दो या ना दो पर ढाढस तो बंधा ही सकते हो, ऐसी भावना रखने से सामने वाले के मन को सात्वता मिलती है। क्षुल्लक श्री चंद्रदत्त सागर ने कहा जैन दर्शन में नव देवता पूज्य हैं, हमें उनकी भक्ति आराधना करनी चाहिए। आज सच्ची आस्था की कमी होती जा रही है। सच्ची आस्था ही हमें सच्चा रास्ता बतलाती है, प्रभु से जोड़ी है। मुनि सेवा समिति सदस्य मनोज जैन लालो ने बताया मुद्राबाद से छुल्लक जी के ग्रहस्थ अवस्था के परिवार जन, मुनि संघ के दर्शनार्थ अंकुर कॉलोनी पधारे, मंदिर कमेटी से डीके जैन प्राचार्य, मुनि लालो, जिनेश बहरोल एवं चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष कमलेश चौधरी महामंत्री सुनील जैन, संतोष स्टील के द्वारा उनका सम्मान किया गया।

मतदाता जागरूकता रैली को, हरी झंडी दिखाकर रवाना किया



ओरछा, देशबन्धु। विधानसभा निर्वाचन अंतर्गत निवाड़ी जिले की ओरछा तहसील में बेतवा नदी के कंचना घाट पर मतदाता जागरूक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मप्र के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन, संभागायुक्त डॉ. वीरेन्द्र कुमार रावत शामिल हुये। सर्वप्रथम श्री राजन द्वारा कंचना घाट पर बनाई गई रंगोली पेन्टिंग का अवलोकन किया। आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्राप्त छात्रा महकशि बानो व खुशबू कुशवाहा द्वारा अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ व कैप पहनाकर किया। मप्र पर्यटन बोर्ड द्वारा आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्राप्त 50 छात्राओं ने आत्मरक्षा पर केंद्रित गतिविधियों का प्रदर्शन किया। तदोपरान्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा मैक्रोटो बिन्नी के चित्र का अनावरण किया, जिसमें संदेश है बिन्नी ने कई बात है प्यारी, वोट डारन सबकी जिम्मेदारी। कार्यक्रम के अंत में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा मतदाता जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

जनपद सदस्य ने वाहन खरीदने वाले पर फुसकेले जी का लेखन सदैव जीवन्त रहेगा: डॉ. शरद सिंह लगाया बेचने का आरोप



सागर, देशबन्धु। शाहगढ़ जनपद पंचायत के वार्ड क्रमांक 13 के सदस्य शिवराज सिंह लोधी सेमरा रामचंद्र ने वाहन खरीदने वाले पर ही बेचने का आरोप लगाया है। इसके साथ ही पुलिस अधीक्षक को भी शिकायत की है। श्री लोधी ने शनिवार को पत्रकारों से चर्चा करते हुए बताया कि 2019 में उन्होंने स्कॉपियो कार क्रमांक एमपी 65 सी 1595 फायनेंस कराई थी जो कि मोतीनगर थाना क्षेत्र के बाहुवली कॉलोनी निवासी राजेश जैन के

माध्यम से खरीदी थी। जो कि वाहन खरीदने-बेचने का काम करते हैं। लोधी ने आरोप लगाया कि जैन ने फायनेंस वाहन को किराए पर लगाने आश्वासन दिया मगर हाल ही में मकरोनिया निवासी कपिल खत्री को बेच दी है जबकि वाहन के पंजीयन से लेकर अन्य कागजात लोधी के नाम पर दर्ज हैं। मामले को लेकर राजेश जैन का कहना है कि शिवराज लोधी से चार पहिया वाहन खरीदा था, जिसके दस्तावेज भी हैं। शिवराज द्वारा मुझ पर लगाए गए सभी आरोप निराधार हैं। उनके द्वारा भी शिवराज लोधी की शिकायत पुलिस में की गई है। वही अर्पित गोस्वामी, मैनेजर, एसके फायनेंस कंपनी का कहना है कि गाड़ी पर अभी भी शिवराज लोधी के नाम से लोन चल रहा है। इस गाड़ी पर पहले कभी कपिल खत्री के नाम से लोन हुआ है इसकी जानकारी नहीं है।

सागर, देशबन्धु। महेन्द्र फुसकेले की द्वितीय पुण्य तिथि पर प्रगतिशील लेखक संघ सागर इकाई द्वारा महेन्द्र फुसकेले स्मृति साहित्य अलंकरण 2023 एवं महेन्द्र फुसकेले एवं हरिशंकर परसाई स्मरण समारोह सरस्वती वाचनालय के सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर साहित्यकार डॉ. शरद सिंह को शॉल श्रीफल सम्मान पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए महेन्द्र फुसकेले स्मृति साहित्य अलंकरण वर्ष 2023 से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में डॉ. शरद सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि महेन्द्र फुसकेले मजदूरों के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहेंगे और उनका लेखन सदैव जीवन्त एवं समासायिक रहेगा। मुख्य अतिथि डॉ. सुरेश आचार्य ने अपने वक्तव्य में परसाई के व्यंग्य भोलाराम का जीव सुनाते हुए महेन्द्र फुसकेले एवं परसाई के व्यक्तित्व व कृतित्व पर चर्चा की। विशिष्ट अतिथि शुक्देव प्रसाद तिवारी ने श्री फुसकेले को महामानव की उपाधि देते हुए समुद्र मंथन के चौदह रावों की मानव जीवन से तुलना की।



समारोह में कैलाश तिवारी विकल के आलेख का अविक्ल वाचन निरंजना जैन ने किया। पीआर मलैया ने फुसकेले और परसाई की रचनाओं की वित्सारित समीक्षा करते हुए अपना आलेख वाचन किया। साहित्यकार वीरेन्द्र प्रधान ने परसाई और फुसकेले को समाचार पत्रों के अच्छे स्तंभकार निरूपित करते हुए उनकी मित्रता का उल्लेख किया।

टीकाराम त्रिपाठी ने प्रो. कांतिकुमार जैन द्वारा लिखित व प्रकाशित आलेख का वाचन दिया। डॉ. मनोज श्रीवास्तव ने महेन्द्र फुसकेले के आकाशवाणी संबंधित संस्मरण सुनाए। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. गजाधर सागर ने परसाई और फुसकेले से अपने वैयक्तिक संबंधों की चर्चा करते हुए उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। अंत में प्रलेस इकाई के महासचिव पंडित फुसकेले ने उपस्थित व्यक्तियों एवं वाचनालय के प्रति आभार ज्ञापित किया। अतिथियों का स्वागत डॉ. एम के खरे, डॉ. नम्रता फुसकेले, सुमन झुडेले ने किया। इस अवसर पर मुकेश तिवारी, एड. संजय गुप्ता, अशोक फुसकेले, हरमोविन्द विश्व, पार्षद राकेश राय, डॉ. लक्ष्मी पांडेय, प्रभात कटारे, आरके तिवारी, केएल तिवारी, पून सिंह राजपूत, डॉ. अनिल जैन, क्रांति जबलपुरी, डॉ. विनोद तिवारी, डॉ. चंचला दले, बंगलुरु से पथारी आराधना खरे, सुनीला सराफ, उमाकान्त मिश्र और श्री फुसकेले के परिवारजनों की उपस्थिति रही।

सार समाचार

जेपी निगम की प्रतिमा स्थापित होगी



छतरपुर, देशबन्धु। विधायक और वरिष्ठ अधिवक्ता जगदंबा प्रसाद निगम की स्मृति में महाराजपुर के लोकनायक हाईस्कूल में उनकी प्रतिमा स्थापित की जाएगी। श्री निगम के शिष्य हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज सुरेंद्र गंगोले की अध्यक्षता में शनिवार को मून सिटी में हुई एक बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक में वरिष्ठ अधिवक्ता कौशल किशोर त्रिपाठी, पत्रकार हरि प्रकाश अग्रवाल, सुरेंद्र अग्रवाल, देवेन्द्र अग्रवाल, रामकिशोर अग्रवाल, छत्रसाल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष राधे शुक्ला, लोकनायक हाईस्कूल महाराजपुर के प्राचार्य फलालाल चौरसिया सहित अन्य लोग मौजूद थे। बैठक में श्री निगम की प्रतिमा स्थापित कर गणतंत्र दिवस के अवसर पर 26 जनवरी 2024 को मून सिटी में समारोह में उसके अनावरण का निर्णय भी लिया गया। समाजवादी नेता श्री निगम तीन बार छतरपुर से विधायक रह चुके हैं। गत वर्ष उनका निधन हो गया था। महाराजपुर के जिस लोकनायक हाईस्कूल में उनकी प्रतिमा स्थापना की जानी है वह उन्होंने ही खोला था। स्कूल परिसर में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पहले से स्थापित है। बैठक के पूर्व श्री गंगोले ने निगम साहिब की समाधि स्थल पर जाकर पुष्प गुच्छ चढ़ा कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

मतदान केन्द्रों में आवश्यक सुविधाएं क्रियाशील रखने के निर्देश



छतरपुर, देशबन्धु। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संदीप जी.आर. के निर्देश में मंगलवार को विधानसभा चुनाव के अंतर्गत लागू आदर्श आचरण संहिता का कड़ाई से पालन कराने एएसटी एवं एएसटी टीमों जिले भर में पकटव रहे। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संदीप जी.आर. ने शुक्रवार को अंतर्राज्यीय बॉर्डर राठ रोड हरपालपुर एवं पहाड़ी बंधा से लगे उत्तरप्रदेश की सीमा पर चैक पोस्ट का औचक निरीक्षण किया। साथ ही एएसटी टीम द्वारा कि जा वाहन चैकिंग कर निरीक्षण कर सघनता से चैकिंग करने के निर्देश दिए और वाहनों के नम्बर सहित जरूरी जानकारी लिखे जाने का रिकॉर्ड पंजी चेक किया। उन्होंने कहा चैकिंग कार्य के दौरान किसी को अनावश्यक असुविधा न हो। कलेक्टर ने शिफ्टवाइज ड्यूटी में लगे स्टॉफ को उपस्थित की जांच की। उन्होंने हरपालपुर के विभिन्न मतदान केन्द्रों में सुविधाओं के क्रियाशील होने का निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

घर का इकलौता धा चिराग

घुवारा, देशबन्धु। उपथाना घुवारा के ग्राम पनबारी के मजरा में निवासित मुलायम सिंह लोधी के गुरुवार की शाम करीब 3 बजे रहस्यमयी तरीके से 8 वर्षीय बालक रूचेन्द्र लोधी का लापता हो जाने से क्षेत्र में सनसनी का माहौल बन गया देर रात तक परिजनों के तलास करने के बाद बच्चा न मिलने से परिजनों ने उपथाना घुवारा मे सूचना दी परिजनों की सूचना पर उपथाना प्रभारी बीरेन्द्र परस्ते ने गुम शुदा का मामला दर्ज कर अपने पुलिस बल के साथ मौके पर जाकर आस पास के क्षेत्र में बच्चे की तलाश की लेकिन बच्चे का कोई सुराग नहीं मिल सका। तो बही गुस्साएं परिजनों के द्वारा शुक्रवार को सुबह सैकड़ों महिला एवं पुरुषों के साथ समारोहों तिगुड़ा सडक पर बैठकर जाम लगा कर प्रशासन से बालक की तलास की मांग करने लगे जाम को खबरे लगते ही भंगवा पुलिस बडामलहरा पुलिस, बमनौरा पुलिस के थाना प्रभारियों द्वारा मौके पर जाकर परिजनों को समझायस देते हुये शीघ्र बच्चे को खोच निकालने की बात कही लेकिन परिजनों ने पुलिस की एक न सुनी और सडक पर बैठे रहे। सडक पर बैठे रहने से यातायात पूर्ण रूप से बंद हो गया तो आने जाने वाले लोगों को करीब 3 घंटे तक निकलने का इंतजार करना पडा।

तहसीलदार व एसडीओपी के लिखित आश्वासन पर परिजनों ने खोला धा जाम

आठ वर्षीय बालक के रहस्यमी तरीके व घर के दरबाजे के सामने से लापता होने पर गुस्साएं परिजनों द्वारा सडक पर जाम लगाकर बच्चे को ढूढने की मांग पर अडे परिजनों द्वारा थाना प्रभारियों की समझायस के बावजूद न मानने पर



तहसीलदार घुवारा ऋतु सिंघई व बडामलहरा एसडीओपी बीरेन्द्र बहादुर ने जाम स्थल पर पहुंचकर परिजनों को समझायस दी लेकिन परिजन नहीं मानी तब जाकर कॉफी समझायस के बाद लिखित रूप में शीघ्र तलास करने पर जाम खोलने की बात कही तो तहसीलदार ने 24 घंटे के अंदर तलास कर बालक को सोपनी की लिखत दी तब जाकर परिजनों ने जाम खोला।

एसडीओपी ने टीम बनाकर हर पहलू की जांच शुरू

जिला अस्पताल के ब्लड बैंक में लगी आग

लाखों की मशीनों सहित 150

यूनिट रक्त का नुकसान



शार्ट सर्किट से आगजनी की आशंका, क्षति जांच रहें टीमें

छतरपुर, देशबन्धु। जिला अस्पताल में मौजूद ब्लड बैंक में शनिवार को दोपहर करीब 4 बजे अचानक भीषण आग लग गई।

आगजनी का कारण एसी यूनिट के समीप हुई शार्ट सर्किट को बताया जा रहा है। इस आगजनी के कारण ब्लड बैंक में रखी हुई लाखों रूपए की कई मशीनों सहित लगभग डेढ़ सौ यूनिट रक्त का नुकसान होने की आशंका है। आगजनी की खबर लगते ही बचाव दलों ने मौके पर पहुंचकर बचाव कार्य शुरू किया।

ब्लड बैंक की प्रभारी डॉ. श्वेता गर्ग एवं लैब टैक्निशियन नीरज खरे ने बताया कि दोपहर के समय अचानक ए.सी. के बोर्ड के आसपास आग लग गई। देखते ही देखते आग चारों तरफ फैलने लगी। आग की लपटें काफी तेज थीं जिसके कारण लैब में रखी सामग्री जल्द ही आग की चपेट में आ गई। आगजनी के दौरान ब्लड बैंक में मौजूद स्टाफ तुरंत निकलकर भागा और बचावदल को सूचना दी। मौके पर पुलिस, फायर ब्रिगेड एवं एसडीआरएफ की टीम ने मोर्चा संभाला। नीरज खरे ने आशंका जताई है कि इस आगजनी के कारण ब्लड बैंक की मशीनों को नुकसान हुआ है साथ ही ब्लड बैंक में डेढ़ सौ यूनिट रक्त भी मौजूद था। हो सकता है कि आगजनी के कारण इसका नुकसान हुआ हो। हालांकि फिलहाल आग पर काबू पा लिया गया है लेकिन अत्यधिक धुआं होने के कारण अभी नुकसान का आंकलन नहीं लग पाया है।

नशामुक्ति कार्यक्रम के दौरान हाफ मैराथन का आयोजन किया गया



छतरपुर, देशबन्धु। श्री कृष्ण विश्वविद्यालय छतरपुर में 12 अक्टूबर को नशामुक्त हाफ मैराथन का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में अध्ययनरत 03 दर्जन से अधिक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। जिसमें वर्चुअल माध्यम से मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय शिक्षार, मंत्री आवासन और शहर कार्य नशामुक्त हाफ मैराथन के समर्थन में श्री कृष्ण विश्वविद्यालय छतरपुर मध्य प्रदेश में नशा मुक्त हाफ मैराथन आयोजित हुई जिसमे वर्चुअल माध्यम से सम्मिलित होकर युवाओं का हौसला बढ़ाया और उन्हें उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुये श्री कृष्ण विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. बृजेंद्र सिंह गौतम ने अपने वक्तव्य में कहा कि नशा मुक्ति को अपनाकर हम स्वस्थ, सशक्त और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

इसलिए, हमें नशा मुक्ति के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए और समुदाय को एक साथ मिलकर नशे से लड़ने के उपाय ढूढने में सहयोग करना चाहिए। यदि हम सभी मिलकर सामरिक भावना दिखाएंगे, तो हम निश्चित रूप से एक नशा मुक्त समाज की ओर अग्रसर होंगे। विश्वविद्यालय के चेयरमैन डॉ. पुष्पेंद्र सिंह गौतम ने कहा कि हमारे देश का उज्वल भविष्य युवाओं पर टिका होता है। अगर देश की युवा पीढ़ी ही गलत रास्ते में जाने लगे तो निश्चित ही उनका भविष्य अंधकार में चला जाता है। हमारे देश का युवा वर्ग जिन्दगी के हर पहलू को जीने की इच्छा होती है। युवा वर्ग नशे को अपनी शान समझते हैं। वे शराब, गुटखा, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट का नशा करते हैं। उनकी पाठी नशे के बगैर अधूरी है। हम नशामुक्ति अभियान से जागरूक करके अपनी युवा पीढ़ी के अंधकारमय भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं।

डीएपी की एक और रैक हरपालपुर पहुंची, किसानों को खाद की किल्लत से मिलेगी राहत

हरपालपुर, देशबन्धु। बीते सात दिनों में छतरपुर जिले के हरपालपुर रेलवे स्टेशन पर डीएपी खाद की दूसरी रैक पहुंची। रबी सीजन पर जिले में डीएपी खाद की किल्लत बनी हुई है। शनिवार को जिले के किसानों के लिए राहत भरी खबर आई। हरपालपुर रेलवे स्टेशन पर सुबह 5 बजे 2700 मीट्रिक टन डीएपी खाद पहुंचा, जिसे जिले भर की सोसायटियों एवं मार्केटिंग गोदामों के माध्यम से किसानों तक पहुंचाया जाएगा।

पूरे जिले में डीएपी परिवहन शुरू

जैसे ही रैक प्वाइंट पर मालगाड़ी आई वैसे ही परिवहन ठेकेदार सुशील अग्रवाल द्वारा कृषि विभाग की निगरानी में खाद ट्रकों में लोड कर कर मार्केटिंग गोदामों के लिए रवाना होना शुरू हो गया है। कृषि विभाग के वरिष्ठ कृषि विस्तार



अधिकारी एबी पटेल ने उम्मीद जताई है कि जिले में किसानों तक समय से और पर्याप्त डीएपी खाद मिल सकेगा। किसानों को डबल लॉक गोदामों एवं सहकारी समितियों के माध्यम से खाद का वितरण

किया जाएगा।

हरपालपुर रैक प्वाइंट पर परिवहन ठेकेदार सुशील अग्रवाल द्वारा आधा सैकड़ ट्रक परिवहन में लगा कर डीएपी खाद उठाव शुरू कर दिया जो रविवार दोपहर

तक रैक प्वाइंट से उठा कर मार्केटिंग गोदामों में पहुंचा दिया जायेगा। ट्रकों की पर्याप्त संख्या होने में जल्द परिवहन कर जिले के विभिन्न स्थानों पर खाद का परिवहन कर पहुंचाया जायेगा।

मार्केटिंग के इन गोदामों होगा ऐसा खाद वितरण

राज्य सहकारी विपणन संघ छतरपुर के द्वारा जारी योजना के मुताबिक फिलहाल छतरपुर के लिए 1560 मीट्रिक टन डीएपी खाद को जल्द से जल्द सोसायटियों तक भेजा जाएगा। इन भण्डारण केन्द्रों से ही खाद विभिन्न सोसायटियों तक पहुंचाया जाएगा।

कृषि विभाग के अधिकारी एबी पटेल, एसडीओ सुरेंद्र अग्रवाल द्वारा रैक प्वाइंट का निरीक्षण कर मार्केटिंग गोदाम हरपालपुर स्टॉक में रखे डीएपी, यूरिया का सैम्पल भरने की कार्यवाही की गई।

निर्वाचन अधिकारी से शिकायत के कारण बंद होगा संचालन



छतरपुर, देशबन्धु। पिछले दो वर्षों से एक रूप में जरूरतमंद लोगों को भरपेट भोजन करा रही छतरपुर विधायक आलोक चतुर्वेदी की रसोई सेवा जल्द ही बंद हो सकती है। इस रसोई में प्रतिदिन सैकड़ों लोग एक रूप की राशि देकर भरपेट भोजन करते हैं। अब ऐसे लोगों को भोजन के लिए परेशान होना पड़ सकता है। शनिवार को किशोर सागर पर

स्थित चाचा की रसोई में आए लोगों को विधायक आलोक चतुर्वेदी के स्टाफ ने यह सूचना दे दी है।

रसोई के संचालन का काम देख रहे विधायक आलोक चतुर्वेदी के समर्थक सुरेशबाबू खरे ने बताया कि पूर्व मंत्री ललिता यादव अथवा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा चाचा की रसोई सेवा को बंद करने के लिए निर्वाचन अधिकारी से शिकायत

की गई है। विधायक आलोक चतुर्वेदी की इस सेवा को निर्वाचन आचार संहिता के उल्लंघन के रूप में बताया जा रहा है जिसके कारण विधायक आलोक चतुर्वेदी ने आम लोगों से क्षमा मांगते हुए इस रसोई को जल्द ही बंद करने के निर्देश दिए हैं। सुरेशबाबू खरे ने बताया कि 15 अक्टूबर 2021 से संचालित हो रही इस रसोई में प्रतिदिन लोगों को शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन सिर्फ एक रूपए की सम्मान राशि पर कराया जा रहा था। अब ऐसे लोगों को यहाँ भोजन उपलब्ध नहीं होगा। उन्होंने प्रशासन से अपील की है कि जरूरतमंद लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की जाए। उधर हर रसोई के बंद हो जाने की सूचना मिलते ही रसोई पहुंचने जरूरतमंद लोगों ने दुख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि इस सेवा को बंद नहीं होना चाहिए व इसका विरोध रसोई से हमें एक सहारा मिला हुआ था।

रैली एवं नुककड नाटक के माध्यम से पुनः जगाई स्वच्छता की अलख



घुवारा, देशबन्धु। नगर अशासकीय फूलचंद्र जैन मोन्यूमेंट स्कूल समूह के विद्यार्थियों के छात्र/छात्राओं के द्वारा जैन शिक्षा समूह के मार्ग दर्शन में जनजागरूकता संपर्क, रैली एवं जनजागरूकता नुककड नाटक का आयोजन किया गया। जिसमें नुककड नाटक के माध्यम से स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करने के साथ भारत सरकार के स्वच्छता कार्यक्रम से जोड़ने का कार्य किया गया। रैली का शुभारंभ श्री प्रतिपाल सिंह बुंदेला जी के द्वारा हरी झंडी दिखा कर किया गया। रैली स्कूल परिसर से बस स्टेंड मार्ग से होते हुए, जंगल चौकी प्रांगण में पहुंची। बता दें रैली में मुख्य रूप से नर्सरी से कक्षा 4 तक के छात्र सम्मिलित हुए। जिन्होंने स्वच्छता से जुड़ने हेतु समाज से आग्रह किया।

कक्षा 5 से 8 तक के लगभग 144 बच्चे 12 समूह बनाकर संपूर्ण नगर में घर घर जाकर संपर्क का कार्य संपन्न किया। जहां बच्चों ने लोगों को जागरूक भी किया तो वहीं छोटे बच्चों के द्वारा 2000 से अधिक बनाई गई पेंटिंग्स को वितरित कल स्वच्छ घुवारा बनाने का सेवन किया। साथ ही हस्ताक्षर करते हुए शेष थली की कि हम स्वच्छता बनाई रखने में हर संभव भूमिका निभाएंगे। साथ ही बच्चों द्वारा रास्ते में जितने भी दुकाने मिली वहां जा जाकर दुकानदारों को नगर को स्वच्छ रखने के उपाय बतलाये।

जंगल चौकी प्रांगण में पहुंचकर सभी बच्चों एवं समूहों ने कक्षावार नुककड नाटक के रूप में अपनी अपनी प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम के दौरान नगर के वरिष्ठ शिक्षक श्री जे के

डॉक्टरों ने खुद कराई अपनी जांच



छतरपुर, देशबन्धु। शनिवार को जिला अस्पताल में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की जिला इकाई के द्वारा चिकित्सकों के लिए ही एक दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस स्वास्थ्य शिविर के दौरान आईएमए के चिकित्सकों ने जिला अस्पताल के सभी चिकित्सकों का स्वास्थ्य परीक्षण किया।

आईएमए की ओर से कहा गया कि एक डॉक्टर दिन भर अत्यधिक व्यस्त रहकर दूसरों का उपचार करता है लेकिन अपने लिए टाइम नहीं निकाल पाता इसलिए आईएमए की जॉब ने सभी चिकित्सकों का ब्लड, शुगर, बीपी, ईसीजी आदि जांच एवं उन्हें स्वास्थ्य संबंधी सलाह दी। आयोजन के दौरान रिटायर सीएमएचओ डॉ. केके चतुर्वेदी, सिविल सर्जन डॉ. जीएल अहिरवार, डॉ. ऋषि द्विवेदी, डॉ. अरुणेंद्र शुक्ला, डॉ. अंकुश खरे आदि मौजूद रहे।

छात्रों ने अचानक शिक्षकों को विषय विशेष देकर संवाद करने को कहा

सूचना तोताराम तो जान आत्माराम, अभय का परिणाम विश्वास



छतरपुर, देशबन्धु। शासकीय हाईस्कूल रामपुर में प्राचार्य लखनलाल असाठी ने शनिवार को सांसीएलई एवं आनंद सभा के दौरान एक अभिनव प्रयोग कराया जिसमें छात्रों ने मौके पर विषय देकर शिक्षकों से त्वरित व्याख्यान करने को कहा। इस दौरान सूचना, सुख, उत्साह, विनम्रता, चरित्र, कर्तव्य, ज्ञान और आत्मविश्वास पर शिक्षकों ने संवाद कर विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। सबसे पहले सूचना शब्द पर वरिष्ठ शिक्षक राजीवमन पट्टेरिया ने कहा कि जो भी हमें प्राप्त हो रहा है वह सभी

सूचना ही है। प्राप्त सूचना को अग्नेयण करते समय हमें उसके सोर्स और उसकी प्रामाणिकता पर भी ध्यान देना होगा। इन दिनों सूचना का ओवरफ्लो हो रहा है। सुख शब्द को परिभाषित करते हुए कृष्ण कुमार तिवारी ने कहा कि पृथी दुनिया इसकी तलाश में है और यह शारीरिक और मानसिक दोनों स्तर पर आवश्यक है। उत्साह शब्द की व्याख्या करते हुए ज्योति व्यास ने कहा कि एक तरह से जिज्ञासा ही उत्साह है जो उम्र के साथ बढ़ती जाती है। अभय कुमार जैन ने विनम्रता पर कहा कि सीखने के लिए

विनम्र होना आवश्यक है। चरित्र शब्द को स्पष्ट करते हुए शरद कुमार नामदेव ने कहा कि अच्छा आचरण ही मेरा पहला और श्रेष्ठ धर्म है। कुंवर सिंह केवट ने कर्तव्य शब्द को स्पष्ट करते हुए कहा कि इसके लिए फल कामना को त्याग करना होगा। सुरेश कुमार अहिरवार ने ज्ञान शब्द पर अपनी बात रखते हुए कहा कि ज्ञान माता-पिता, पड़ोसी, समाज, प्रकृति सभी जगह से प्राप्त किया जा सकता है। प्राचार्य लखनलाल असाठी ने आत्मविश्वास को परिभाषित करते हुए कहा कि जहाँ-जहाँ अभय होगा वहाँ-वहाँ विश्वास होगा। जिस किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान और समय पर हमें अभय है वहाँ हम विश्वासपूर्वक जा पाते हैं। विश्वास की पूर्णतः आत्मविश्वास है। खासकर हम अपने माता-पिता को लेकर पूर्ण रूप से आशस्त होते हैं। यह भी तय किया गया कि प्रत्येक सप्ताह शनिवार को विद्यार्थी इसी तरह से अन्य विषयों पर भी छात्रों से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान सुन सकेंगे और यह सभी विषय अचानक दिए जाएंगे ताकि छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों की भी थिंकिंग और लर्निंग स्किल में बढ़ोतरी हो।

कहानी

हरिशंकर परसाई

गांधीजी की शॉल



रा दिन हो गए, पर शॉल का पता नहीं लगा। सेवकजी ने रेलवे स्टेशन पर पूछताछ की, डिब्बे में साथ बैठे एक परिचित यात्री से पूछा, पर पता नहीं लगा। पुलिस में रिपोर्ट और अखबार में विज्ञापि छपाने पर सोचा, पर लगा कि गांधीजी की दी हुई पवित्र शॉल थी, उसे पुलिस और अखबारी मामलों में फंसाने से उसकी पवित्रता नष्ट होगी। कोई चाबियों का गुच्छा या सूटकेस तो था नहीं। पूज्य गांधीजी की शॉल थी।

सेवकजी हर दिन की तरह दरवाजे पर कुर्सी लगाकर बैठे थे। शून्य में देख रहे थे। सड़क पर कितने ही परिचित निकल गए। सेवकजी ने किसी को नहीं बुलाया। और दिन होता, तो वे परिचित को देखते ही वहीं से बैठे-बैठे जयहिंद उछालकर उसे रोकते।

बड़ी चौड़ी मुस्कान से जाते, उसका हाथ पकड़ लेते और घोर आत्मीयता से कहते- ऐसे नहीं हो सकता। आप बिना चाय के नहीं जा सकते। पकड़कर भीतर ले जाते, चाय बुलाते अलमारी से एक फाइल निकालते, जिसमें वे अखबारी कतरनों की लगी थीं, जिसमें उनका नाम छपा था। इनमें वह कतरन भी थी, जिसमें उनके बचपन में खो जाने पर पिता ने उनकी खोज में विज्ञापि छपाई थी। एक-एक कर सब कतरने वे बताते और बीच-बीच में अपनी राष्ट्र, समाज सेवाओं का उल्लेख करते जाते। वे बताते कि किस सन् में किस नेता के साथ जेल में थे। परिचित उठने का उपक्रम करता तो सेवकजी आग्रह से उसका हाथ पकड़कर कहते-बस! एक मिनट और। मैं आपको अपने जीवन की सबसे मूल्यवान, सबसे पवित्र वस्तु बतलाता हूँ।

‘अलमारी में से तह की हुई एक हल्के नीले रंग की शॉल निकालते और आरती के थाल की तरह सामने करके, भाव विभोर हो कहते- ‘यह शॉल मुझे पूज्य गांधीजी ने दी थी। मेरे विवाह में वे स्वयं आशीर्वाद देने आए थे। हम दोनों के सिरों पर हाथ रखकर हमसे बोले- ‘तू मेरा बेटा नहीं, यह मेरी बेटा है। ‘खिलखिलाकर हंस पड़े बापू और यह शॉल हम दोनों को ओढ़ा दी। आज वे नहीं हैं...’ वे आंख बंद कर लेते और भाव तल्लीन हो जाते। परिचित अगर समझदार होता, तो इस स्थिति का लाभ उठाकर बिना जयहिंद किए ही झटपट निकल भागता। कोई परिचित उस सड़क के बिना उन कतरनों और उस शॉल को देखे, निकल नहीं सकता था। आज चार दिनों से लोग बेखटके निकल रहे थे। सेवकजी उन्हें नहीं छेड़ते थे। सोचते - उस घर में अब किसको क्या बुलाएँ, जिसकी श्री ही चली गई है। टाउन हॉल में शाम को सभा की

घोषणा करता हुआ लाउडस्पीकर लगा तांगा निकला। सेवकजी के मन में उमंग की लहर उठी। पर लगा कैसे जाऊँ। शॉल जो खो गई।

हर सभा में वे गांधीजी की शॉल ओढ़कर जाते। मंच पर अंतिम वक्ता के बाद खड़े होकर कहते- ‘मुझे भी इस विषय पर दो शब्द कहना है।’ माइक पर वे बोलते- मैंने जो कुछ सीखा गांधीजी के चरणों में बैठकर। वे मुझे पुनर्वत स्नेह करते थे। मेरे विवाह में वे स्वयं आशीर्वाद देने आए...और पूरा किस्सा। मेरे जीवन की सबसे मूल्यवान, सबसे पवित्र निधि है। सभा में लोग जानते थे कि सेवकजी अवश्य आएंगे और शॉल के बारे में बताकर बैठ जाएंगे। एक सभा में वे इस विषय पर आ ही रहे थे कि सभापति ने घंटी बजा दी। हड़बड़ाकर बैठने लगे, तभी किसी मसखरे ने आवाज लगाई- ‘सेवकजी! आप शॉल के बारे में बताना भूल गए।’ लोग हंस पड़े। पर सेवकजी ने सहज भाव से कहा- जब प्रसंग उठाया ही गया है, तो बताना मेरा धर्म है और फिर पूरा वाक्या...।

सेवकजी उस पीढ़ी के थे, जिसने जवानी के आरंभ में सोच लिया था कि जीवन-भर देश की स्वतंत्रता के लिए संग्राम करेंगे। पर स्वतंत्रता पहले आ गई, जीवन शेष रहा। अब क्या करें? यह तो सोचा ही नहीं था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या करेंगे? जिन्होंने सोच लिया था, वे सरकार चलाने लगे। कुछ विरोधी दल में आ गए। जो जीत न सके, सरकार में नहीं जा सके। वे बड़ी उलझन में आ गए। हारा हुआ राजा रनिवास में जाता है।

सेवकजी अध्यात्म में आ गए। पर वहां मन नहीं लगा। वे लौट आए। पर अब क्या करें? वे पूरे जोर से सोच रहे थे। शॉल जीवन शक्ति ले गई। किसलिए जिएं? जिएं, तो करें क्या?

‘अलमारी में से तह की हुई एक हल्के नीले रंग की शॉल निकालते और आरती के थाल की तरह सामने करके, भाव विभोर हो कहते- ‘यह शॉल मुझे पूज्य गांधीजी ने दी थी। मेरे विवाह में वे स्वयं आशीर्वाद देने आए थे। हम दोनों के सिरों पर हाथ रखकर हमसे बोले- ‘तू मेरा बेटा नहीं, यह मेरी बेटा है।’ ‘खिलखिलाकर हंस पड़े बापू और यह शॉल हम दोनों को ओढ़ा दी। आज वे नहीं हैं...’ वे आंख बंद कर लेते और भाव तल्लीन हो जाते। परिचित अगर समझदार होता, तो इस स्थिति का लाभ उठाकर बिना जयहिंद किए ही झटपट निकल भागता।

ऐसे जीने से मर जाना अच्छा! एक विचार उनके मन में सहसा आया और उसके आवेग से वे खड़े हो गए। चपल पहनी और दूर सदर कोने में कपड़ों की एक दुकान पर गए और वैसे ही शॉल खरीदी ली। मन ही मन समाधान कर लिया- वस्तु सत्य नहीं है, भावना सत्य है। अब समस्या खड़ी हुई कि उसका नयापन कैसे मिटे? सेवकजी ने उसे पानी में डुबाकर सुखाया, उससे फर्श साफ किया, दो-तीन दिन उसे ओढ़कर सोते रहे। अत्याचार से उसकी चमक-दमक गायब हो गई। प्रफुल्लता लौट रही थी, पर ज्योंही वे प्रसन्न होते, आशंका

लगी- कोई भेद न जान ले। कोई सहज ही देखता तो कांप जाते इन्होंने शॉल का रहस्य भांप लिया। अंतिम वक्ता के बाद खड़े हुए। बोले, ‘मुझे इस विषय पर दो शब्द कहना है।’ उन्होंने माइक पकड़ लिया था। दिल धड़क रहा था और हाथ कांप रहे थे। आज पैरों को स्थिर करने का प्रयत्न करना पड़ रहा था। बोलना शुरू किया ‘मैंने जो कुछ सीखा है, गांधीजी से... ये शॉल उन्होंने मुझे दी थी। बापू स्वयं...’

पहली पंक्ति में बैठा एक आदमी उठकर खड़ा हो गया और बोला, ‘क्यों झुट बोलते हैं सेवकजी? यह शॉल तो



कूद पड़ती कि लोग समझ न जाए? शाम की सभा तय थी। कई दिन बाद सेवकजी सभा की तैयारी में थे। कुर्ता और धोती निकाले, शॉल निकाली। मंच पर बैठे धुकधुकी

बिल्कुल नई है और मिल की है। भला गांधीजी मिल की शॉल देते? सभा में हंसी हुई, सेवकजी के पैर डगमगाए, माइक पर पकड़ डीली हुई और वे वहीं बैठ गए।

हिंदी ग़ज़ल परंपरा को समृद्ध करती ग़ज़लें

रामकृष्ण यादव

ई उपन्यास एवं आलोचना की पुस्तकों के प्रकाशन के बाद डॉ. ललन प्रसाद सिंह का पहला ग़ज़ल-संग्रह ‘ग़ज़ल-गीत संगम’ नाम से किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी से सद्यः प्रकाशित हुआ है।

इस संग्रह में दो खंड हैं, पहला ‘ग़ज़ल खंड’ तथा दूसरा ‘गीत खंड’। ग़ज़ल खंड में कुल 326 ग़ज़लें सम्मिलित हैं। ये ग़ज़लें उन्होंने 1995 से 2022 के बीच के कालखंड में रची हैं। समयांतराल की वजह से प्रारंभ की ग़ज़लों एवं वर्तमान की ग़ज़लों की भाषा-शिल्प एवं कहन में थोड़ा-बहुत अंतर है।

ग़ज़ल की अपनी एक विशिष्ट शैली है, जो कविता से भिन्न है। यही वजह है कि ललन प्रसाद सिंह की ग़ज़लें कथ्य, संकेतो, शब्दों एवं तान के माध्यम से एक नए शक्तिज का उद्घाटन करती हैं। उनकी ग़ज़लें सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विद्रूपताओं पर प्रहार करने के साथ-साथ राजनैतिक क्रांति का उद्घोष करती हैं-

‘समाजवाद तेरे लिए सिर्फ जुमला है

मगर उनके लिए तो अन्याय पर हमला है।

राजनैतिक व्यवस्था से उत्पन्न पीड़ा, दर्द, असमानता, अमीरी-गरीबी का फासला उन्हें उद्देलित करता है -

‘काजल की कोठरी में बैठे हो शोशे की दीवार लगाकर कब तक जिंदा रहोगे किसानों की अस्थि चबाकर’ सियासतदार पर चोट करते हुए लिखते हैं-

‘हमें टुकड़े-टुकड़े में बांटे हो अपनी सियासत के खातिर तेरी नीयत पर नज़र है। तुम हो कितने शातिर’

आज सांप्रदायिकता का जहर सियासत में इस कदर फैल गया है कि आये दिन दंगा-फसाद होते रहते हैं; जातीय-नस्लीय हिंसा होती है; जिंदगियां तबाह हो जाती हैं; बस्तियां-घर जला दिए जाते हैं। सियासतदार अपनी-अपनी रोटियां सकते हैं। सांप्रदायिकता से उपजी पीड़ा को एक युवती यूं बयान करती है-

‘अम्मा की फूट गई चूड़ियां हमारी उजड़ गई दुनिया आदमी मर गया, तेरी सियासत में मेरा आशियां जल गया, तेरी

सियासत में ’

लोकतांत्रिक व्यवस्था में ललन प्रसाद सिंह की पूर्ण आस्था है। वे समता एवं समानता के पक्षधर हैं। पर भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था से पूरी तरह सहमत नहीं हैं। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की खामियां उन्हें नागवार लगती हैं। वे लिखते हैं-

‘व्यक्ति बदल जाता है, व्यवस्था कहां बदलती चुनाव खत्म हो जाता, खुशी कहां मिलती’

... ..

‘वे कहते हैं जनता मालिक है पर सब मालों के वे मालिक हैं

जहां तक भाषा का सवाल है तो इस संग्रह की भाषा उर्दू-हिंदी

स्त्री-विमर्श, एवं आदिवासी-विमर्श पर आधारित ग़ज़लें भी हैं।

ललन प्रसाद सिंह के इस संग्रह में इश्क-हुज्र, दोस्ती-दुश्मनी, अपना-पराया, खुशी-गम, भाषा, संप्रदाय, जाति, लिंग, प्रकृति, बुद्ध, कबीर, मार्क्स, कला, संस्कृति, आदि विविध विषयों पर कई ग़ज़लें हैं और उन सभी के तेवर अलग-अलग हैं।

श्री सिंह के इस संग्रह में नब्बे गीत भी शामिल हैं। हिंदी साहित्य में गीत सामान्यतः कम लिखे गए हैं। हालांकि गीतों का जनजीवन पर काफी प्रभाव रहा है।

जहां तक भाषा का सवाल है तो इस संग्रह की भाषा उर्दू-हिंदी

जहां तक भाषा का सवाल है तो इस संग्रह की भाषा उर्दू-हिंदी मिश्रित ‘हिंदुस्तानी’ है। ग़ज़ल-गीतों में शब्दों के नपे-तुले प्रयोग हैं। तत्सम शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है, तद्भव एवं देशज शब्दों के प्रयोग से भाषा लयात्मक एवं प्रभावोत्पादक बन गई है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि ललन प्रसाद सिंह का ‘ग़ज़ल-गीत संगम’ एक महत्वपूर्ण संग्रह ही नहीं, अपितु एक अनूठा संग्रह भी है। उनकी ग़ज़लें सपने दिखाती हैं और देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ-साथ कुट्यवस्था के विरुद्ध क्रांति के लिए जोश भी जगाती हैं। उनके गीत पाठक-श्रोताओं को गुनगुनाने पर विवश कर देते हैं।

मिश्रित हिंदुस्तानी है। ग़ज़ल-गीतों में शब्दों के नपे-तुले प्रयोग हैं। तत्सम शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है, तद्भव एवं देशज शब्दों के प्रयोग से भाषा लयात्मक एवं प्रभावोत्पादक बन गई है।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि ललन प्रसाद सिंह का ‘ग़ज़ल-गीत संगम’ एक महत्वपूर्ण संग्रह ही नहीं, अपितु एक अनूठा संग्रह भी है। उनकी ग़ज़लें सपने दिखाती हैं और देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ-साथ कुट्यवस्था के विरुद्ध क्रांति के लिए जोश भी जगाती हैं। उनके गीत पाठक-श्रोताओं को गुनगुनाने पर विवश कर देते हैं।

पर उन्हें उम्मीद है कि एक न एक दिन यह व्यवस्था बदलेगी। एक दिन उनका भी वक्त आएगा, जो हाशिए की ओर धकेल दिए गए हैं। क्योंकि लोकतंत्र की चक्की धीरे-धीरे घूमती है।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि ललन प्रसाद सिंह का ‘ग़ज़ल-गीत संगम’ एक महत्वपूर्ण संग्रह ही नहीं, अपितु एक अनूठा संग्रह भी है। उनकी ग़ज़लें सपने दिखाती हैं और देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ-साथ कुट्यवस्था के विरुद्ध क्रांति के लिए जोश भी जगाती हैं। उनके गीत पाठक-श्रोताओं को गुनगुनाने पर विवश कर देते हैं।

ग़ज़ल



महमूद दरवेश का जन्म 13 मार्च, 1942 को फिलिस्तीन में हुआ था, उनकी कविताओं ने अरबी भाषा की कविताओं को एक पहचान अलग पहचान दिलाई. उनकी ज़्यादातर कविताओं का अनुवाद दुनिया की तमाम भाषाओं में हुआ। महमूद दरवेश दुख, सपनों, उम्मीदों के महान कवि माने जाते हैं। लाखों-लाख फिलिस्तीनियों की तरह महमूद दरवेश का परिवार भी अपनी जन्मभूमि से विस्थापित नहीं, बल्कि निर्वासित कर दिया गया, क्योंकि माना यह गया कि जहां वे पैदा हुए वह जमीन उनकी नहीं थी। विस्थापन का दर्द महमूद दरवेश की कविताओं में टूट कर दिखता है। लेकिन उनकी कविता में केवल पीड़ा, आंसू, दुख, आक्रोश, विद्रोह, संघर्ष न था. उनमें उम्मीदें भी थी. उनका दृढ़ विश्वास था कि अब तक का मानव समाज तमाम आततायियों को देख चुका है, उन्हें जर्मीदोज कर चुका है, ऐसे में हमारे देश पर टूट पड़े आक्रांताओं का भी भविष्य वही होगा. हमारी जमीन हमें मिलेगी, हम अपने घर जरूर लौटेंगे।

फिलिस्तीन की मुक्ति और शांति के सपने लिए महमूद दरवेश ने 2008 में 9 अगस्त को इस दुनिया से विदा ली। पाठकों के लिए पेश हैं, महमूद दरवेश की दो अनूदित कविताएं। अनुवाद अनिल जनविजय ने किया है

मैं घोषणा करता हूँ

जब तक मेरी एक बालिशत जमीन भी शेष है एक जैतून का पेड़ है मेरे पास एक नीम्बू का पेड़ एक कुआँ और एक कैक्टस का पौधा

जब तक मेरे पास एक भी स्मृति शेष है पुस्तकालय है छोटा-सा दादा की तस्वीर है और एक दीवार

महमूद दरवेश की दो कविताएं

जब तक उच्चरित होंगे अरबी शब्द गाए जाते रहेंगे लोकगीत पढ़ी जाती रहेंगी — कविता की पंक्तियाँ अनतार-अल-अब्से की कथाएँ फ़ारस और रोम के विरुद्ध लड़े गए युद्धों की वीर गाथाएँ

जब तक मेरे अधिकार में हैं मेरी आँखें मेरे होंठ और मेरे हाथ मैं खुद हूँ जब तक मैं अपने शत्रु के समक्ष घोषित करूँगा —

मुक्ति के लिए प्रबल संघर्ष स्वतन्त्र लोगों के नाम पर हर कहीं मज़दूरों, छात्रों और कवियों के नाम पर

मैं घोषित करूँगा — खाने दो कलकित रोटी कारयों को सूरज के दुश्मनों को मैं जब तक जीवित रहूँगा मेरे शब्द शेष रहेंगे — ‘रोटी और हथियार मुक्ति-योद्धाओं के लिए’

फ़िलिस्तीन के प्रेमी

ओ मेरी प्रिया ! दर्द भरी तेरी आँखें बेधती हैं मेरे हृदय को जब भी मैं याद करता हूँ उन्हें

उनमें गरजती है बिजली दहकता है गुस्सा वियोग झलकता है उनमें

और मैं सन्हाल कर रखता हूँ तेरा दर्द आकाश में चमक रहे हैं सहस्रों सितारे घायल है मेरा हृदय उस पर भी हैं हजारों घाव तेरा दर्द मेरे प्यार का विस्तार है एक पुल है वर्तमान और भावी दिनों के बीच

भला, कैसे भूल सकता हूँ मैं तेरी आँखों में चमकते वे दिन बचपन के वे साल जब साथ-साथ बड़े हुए थे हम

तब मुझे लगता था, मेरी प्रिया ! कि तेरी उन बड़ी-बड़ी आँखों में जल रही है आग और मैं गाने लगता था उनके बारे में नए-नए गीत

पर आज निर्वासन की यह भयानक टण्ड बरसा रही है आग मेरे होंठों को जला रही है भद्दे ढंग से, बेरहमी के साथ

आज वीरान पड़े हैं वे मकान छोड़ने पड़े थे जो हमें पक्षी तक नहीं बैठते अब उनकी मुण्डेरों पर

तड़कने लगे हैं आइने आज्ञादी की मौत के इस जश्न पर और हम बीनते हुए लोकगीतों के टुकड़े आँक रहे हैं कीमत जन्मभूमि की

नए-पुराने सुरीले गिटारों पर हम गाते हैं शब्द-शब्द

अपने गीत और रचते हैं धुनें नई-नई रुदन करते अपने उन वीरान पड़े मकानों पर ओ जानम् ! हमारा प्यार जीवित है अब भी अब भी सुनती है तू मेरी आवाज़ बीते समय के साथ-साथ धीमी जरूर हो गई वो पर कमजोर नहीं हुई

ओ युवा ग्वालन ! मैं देख रहा हूँ तुझे काँटों भरी राह पर दौड़ते हुए गायों और भेड़ों के रेवड़ के पीछे तू गुजर रही है खण्डहर हुए एक घर के पास से जिसका प्रवेश-द्वार बदल गया है राख में

मैं देख रहा हूँ तुझे मेरी प्रिया ! लाइन में लगे हुए सूख रहे एक कुएँ के पास

ओ रात्रिकालीन होटलों में बरतन मलने वाली ! मैं देख रहा हूँ तुझे लेते हुए चिथड़ा-चिथड़ा एक तम्बू में उन अलावों के पास जलाया है जिन्हें अनाथ बच्चों ने और याद कर रहे हैं जो घर के चूल्हे की आग

मुझे विश्वास है, मेरी जान ! चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े तुझे कैसे भी क्यों न रहना पड़े चलना पड़े चाहे किसी भी राह पर निर्वासन की इस आग में, उदासी में बनी रहेगी तू वैसे ही जैसे बरकरार है सूरज समुद्र और हमारी शानदार यह धरती

हजारों-हजार बरस से

मुझे कसम है, तेरे इस रुमाल की जो तूने उपहारित किया था मुझे विदा करते हुए मैं कसम खाता हूँ, जानम् ! तेरी काली घनी बरोनियों की मुझे कसम है तेरी, मेरी जान ! अमर रहेगा फ़िलिस्तीन हमारा भाग्य फ़िलिस्तीन

चमकते सूरज के नीचे फ़िलिस्तीन मेरा है चमकते चान्द के नीचे फ़िलिस्तीन तेरा है फ़िलिस्तीन हमारा है, हमारा ही रहेगा

अपने नए गीतों से हम बेध देंगे ठिठुरती इस हवा को सूखी धरती में डालेंगे नए बीज अपने खून से सींचेंगे लुटे-पिटे खेतों की आत्मा और शरीर फिर गुजर जाएंगे लम्बे वर्ष और उनमें पैदा होगी फ़सल घनी

तेरा नाम — फ़िलिस्तीन तेरी दृष्टि — फ़िलिस्तीन तेरे नयन-नक्श — फ़िलिस्तीन फ़िलिस्तीन — तेरी आशा फ़िलिस्तीन — तेरी आवाज़ फ़िलिस्तीन — महिलोचित गरिमा तेरी

फ़िलिस्तीन जिएगी तू तू मरेगी फ़िलिस्तीन

ओ मेरी प्रिया ! मेरी किताबों का सार और विचार है तू मेरे गीतों की आग है हर क्षण तूने सम्पूर्ण किया मेरा जीवन तेरे बिना होता ये बरबाद और बेरंग मेरे लिए एकमात्र सर्जक है तू एकात्म है तू मेरी मातृभूमि के साथ मेरे इस लबालब हृदय में

मुस्कान लेकर दिल्ली एयरपोर्ट पहुंची स्वाति सिरोटिया

इजराइल-हमास युद्ध में फंसी टीकमगढ़ की बेटी की सुरक्षित वतन वापसी

टीकमगढ़, देशबन्धु। इजराइल-हमास के बीच छिड़े युद्ध में फंसी टीकमगढ़ की स्वाति सिरोटिया आखिरकार शनिवार को सुरक्षित भारत लौट आई। भारत सरकार के प्रयासों के बाद स्वाति को सुरक्षित भारत लाया गया है। स्वाति टीकमगढ़ जिले के कुंडेश्वर धाम की रहने वाली हैं जो इजराइल में रहकर पढ़ाई कर रही थीं और जब युद्ध शुरू हुआ तो इजराइल में ही फंस गई थीं। बंकर में छिपी स्वाति ने फोन के जरिए मदद की गुहार लगाई थी। वहीं कुंडेश्वर में रहने वाले उनके परिजन ने भी स्थानीय प्रशासन और सरकार से बेटी को वापस लाने की गुहार लगाई थी।



दिल्ली पहुंचते ही दिवंगत चेहरे पर मुस्कान

युद्ध का मंजर झेलने के बाद जैसे ही स्वाति शनिवार सुबह दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुंची तो उसके चेहरे पर मुस्कान उसकी वतन वापसी की खुशी को साफजाहिर कर रही थी। स्वाति नवंबर 2019 में इजराइल सरकार की सहमति से एमएससी एग्रीकल्चर करने के लिए इजराइल गई हुई थी, इसी साल अक्टूबर में उसकी डिग्री कंफ्लिट होनी थी। 30 अक्टूबर को उसका भारत वापसी का वीजा था लेकिन इससे पहले ही हमास और इजराइल के बीच युद्ध शुरू हो गया। युद्ध शुरू होने के बाद स्वाति एक बंकर में रह रही थी।

फोन पर मांगी मदद

बंकर में फंसी स्वाति ने भारत सरकार से मदद की गुहार लगाई थी। मोबाइल पर वीडियो कॉल कर परिजन से भी वापस लाने की बात कहते हुए युद्ध के खौफनाक मंजर बयान किए थे। जिसके बाद स्वाति के परिजन ने 8 अक्टूबर को टीकमगढ़ कलेक्टर से मदद की गुहार लगाई थी और सोशल मीडिया के जरिए प्रधानमंत्री से भी मदद की गुहार लगाई थी। रोजाना परिजन बेटी की सलामती के प्रार्थना कर रहे थे जो अब पूरी हो गई है। स्वाति के सुरक्षित भारत लौटने पर उनके माता-पिता ने मीडिया, मध्यप्रदेश सरकार और पीएम नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त किया है।

पुलिस ने 3 अलग-अलग स्थानों से अवैध शराब जप्त कर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया

टीकमगढ़, देशबन्धु। दिगौड़ा पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर कार्यवाही करते हुए ग्राम बम्होरी, दिगौड़ा व रानीगंज तिगैला से अवैध देशी शराब को जप्त कर आरोपियों के खिलाफ 34 आवकरी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। थाना प्रभारी अनुमेहा गुप्ता ने बताया कि क्षेत्र भ्रमण व गश्त के दौरान मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम ने कार्यवाही करते हुए ग्राम बम्होरी, दिगौड़ा व रानीगंज तिगैला से तीन लोगों के कब्जे से अवैध शराब को जप्त किया है। पुलिस टीम ने मुखबिर की सूचना पर ग्राम बम्होरी में राय ढावा के पास से आरोपी मूलचन्द्र

साहू निवासी बम्होरी के कब्जे से 22 क्वार्टर अवैध देशी शराब को जप्त किया। रानीगंज तिगैला पर आम रोड से आरोपी कमलेश राय निवासी कुंडीला हाल रानीगंज के कब्जे से 24 क्वार्टर अवैध देशी शराब को जप्त किया। दिगौड़ा के घुसयाना मुहल्ले में आरोपी जगन्नाथ साहू निवासी दिगौड़ा के कब्जे से 5 लीटर महुआ से बनी हुई अवैध कच्ची शराब को जप्त किया। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी अनुमेहा गुप्ता, एसआई नीरज लोधी, प्रधान आरक्षक विजय सिंह, अजय शुक्ला, सादिक खान, आरक्षक सलमान व अजीत सिंह की अहम भूमिका रही।

निरंतर जारी है कांग्रेस का जनसंपर्क अभियान

टीकमगढ़, देशबन्धु। शनिवार को युवा कांग्रेस के प्रदेश महासचिव शाश्वत सिंह ने ग्राम पंचायत अजोनौर, सापौन सहित उसके समिलित ग्रामों में घर घर जाकर जनसंपर्क किया। जिसमें बड़ी संख्या में सभी ग्रामों के युवा शाश्वत सिंह के साथ कंधा से कंधा मिलाकर उपस्थित रहे और युवाओं ने अपने गांव से पूरी ताकत के साथ कांग्रेस पार्टी को जीतने का आश्वासन दिया। साथ ही शाश्वत सिंह को ग्रामों के वरिष्ठ जनों एवं माता बहनों और कन्याओं ने विजयभव का आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर बड़गांव ब्लॉक कांग्रेस के अध्यक्ष पुष्पेंद्र यादव, युवा कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष, समर। मंडलम अध्यक्ष, सापौन सेक्टर अध्यक्ष सहित कांग्रेस के कार्यकर्ता और पदाधिकारी उपस्थित रहे।



पितृ मोक्ष अमावस्या पर पितरों को दी विदाई



पलेरा, देशबन्धु। हिंदू संवत्सर के आश्विन मास प्रारंभ होने के पश्चात पिछले 15 दिनों से पूर्वजों, पितृ देवों के निमित्त प्रत्येक घर में अर्पण, तर्पण, ब्राह्मण भोजन का आयोजन किया जा रहा है। अंतिम दिन 14 अक्टूबर को सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या तिथि पर पितृदेवों को आदरांजलि देते हुए विदाई दी गई। नगर के पटेश्वरी तालाब एवं संजय नगर नदी घाट में अनेक जगहों पर सामूहिक अर्पण-तर्पण का आयोजन किया गया। पितरों को विदाई देने के साथ ही अगले दिन मां अंबे के स्वागत में घर-घर में घट स्थापना और देवी मंदिरों में मनोकामना जोत प्रचलित की जाएगी।

आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन पर दिगौड़ा पुलिस ने की कार्रवाई राजनीतिक पार्टी के झंडों की माला मकान के बाहर लगाने पर की गई 188 की कार्रवाई



दिगौड़ा, देशबन्धु। विधानसभा चुनाव 2023 को लेकर पूरे प्रदेश में आदर्श आचार संहिता लागू हुई है और साथ ही धारा 144 लागू है। ऐसे में जिला निर्वाचन अधिकारी व जिला पुलिस अधीक्षक द्वारा बिना अनुमति लिए किसी राजनीतिक दल का प्रचार प्रसार करने व आदर्श आचार संहिता

का उल्लंघन करते पाए जाने पर प्रशासनिक अधिकारियों को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। इसी के तहत दिगौड़ा कस्बे में बिना अनुमति के एक राजनीतिक पार्टी के छोटे छोटे झंडों की माला मकान के बाहर लगाकर प्रचार प्रसार कर आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करने का

एक मामला सामने आने पर दिगौड़ा पुलिस ने मकान मालिक पर धारा 188 के तहत कार्रवाई की गई है। थाना प्रभारी अनुमेहा गुप्ता ने बताया कि शनिवार की रात करीब 8 बजे नगर भ्रमण के दौरान बिजरावन रोड पर एक मकान के बाहर राजनीतिक पार्टी के छोटे छोटे झंडों की माला प्रचार प्रसार करने के लिए लगी हुई थी। जब इसकी अनुमति को लेकर मकान मालिक से पूछताछ की गई तो उनके पास अपने मकान के बाहर राजनीतिक पार्टी के छोटे छोटे झंडों की माला लगाने की कोई अनुमति नहीं पाई गई। पुलिस ने आरोपी धर्मेन्द्र सिंह बुंदेला निवासी बिजरावन के मकान के बाहर लगी हुई राजनीतिक पार्टी के छोटे छोटे झंडों की करीब 25 फुट लम्बी माला को निकलवा कर जप्त किया गया और आरोपी के विरुद्ध विधानसभा चुनाव 2023 के परिपालन में आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करते पाए जाने पर धारा 188 के तहत कार्यवाही की गई। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी अनुमेहा गुप्ता, एसआई कल्याण सिंह, प्रधान आरक्षक विजय सिंह, सादिक खान की मुख्य भूमिका रही।

नवोदय विद्यालय के छात्र का एसजीएफआई में हुआ चयन

टीकमगढ़, देशबन्धु। शनिवार को स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ खेलों को भी विशेष महत्व दिया जाता है। नवोदय विद्यालय के बारहवीं कक्षा के छात्र देवराज अहिरवार का स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया वालीबॉल अंडर 17 के लिए हुआ है। यह प्रतियोगिता 31 अक्टूबर से 4 नवंबर 23 तक श्रीनगर जम्मू कश्मीर में आयोजित होगी। विद्यालय के प्राचार्य अजय राज सिंह एवं उप प्राचार्य एफयू खान ने विद्यार्थी देवराज के साथ-साथ व्यायाम शिक्षक मुकेश कुमार एवं व्यायाम शिक्षिका डॉक्टर निशा नंदा को बधाई दी एवं इस सफलता के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।



मानस लीग चैंपियनशिप के पुरस्कार वितरण आज पत्रकार भवन में

इटारसी, देशबन्धु। मानस लीग चैंपियनशिप प्रतियोगिता जो श्री रामचरितमानस के आधार पर दी जाती है। ऋषिकुल संस्कृत विद्यालय नर्मदापुरम के द्वारा यह प्रतियोगिता जिले में प्रति वर्ष आयोजित की जाती है। इस वर्ष अधिक प्रतियोगियों के भाग लेने के कारण प्रतियोगिता के साक्षात्कार नर्मदापुरम के अलावा इटारसी में भी हुए एवं पुरस्कार वितरण भी दोनों स्थानों पर रविवार को होगा। श्री प्रेम शंकर दुबे स्मृति पत्रकार भवन में रविवार को प्रातः 11 बजे चुनाव आचार संहिता के तहत स्वीकृति मिलने के उपरांत आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में पं. मधुकर शास्त्री, प्रोफेसर ज्ञानेंद्र पांडे एवं पं. मनमोहन शास्त्री अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार दो प्रतियोगियों को दिया जा रहा है, जिन्हें पांच-पांच हजार रुपये की राशि प्रमाण पत्र एवं रामचरितमानस पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे। इसी तरह द्वितीय पुरस्कार दो प्रतियोगियों को पृथक-पृथक 2500- 2500 रुपए के दिए जाएंगे। तृतीय स्तर के 6 पुरस्कार पृथक प्रक्रिया से दिए जाएंगे। प्रत्येक पुरस्कार में एक हजार रुपये की राशि प्रमाण पत्र एवं रामचरितमानस दी जाएगी।

2 हजार का ईनामी बदमाश गिरफ्तार

टीकमगढ़, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी द्वारा फरारी/ ईनामी/स्थाई वारंटीयों को गिरफ्तार करने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीताराम व एसडीओपी राहुल कटरे के मार्गदर्शन में शनिवार को थाना प्रभारी देहात को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई की थाना देहात का 2 हजार का ईनामी स्थायी वारंटी सूनू अहिरवार पिता कुटुआ अहिरवार निवासी कुमरयाना मोहल्ला मगवई थाना देहात का मगवई स्कूल के पास बेटा है जो कहीं बाहर भागने की फिराक में है। जिसको बेराबंदी कर पकड़ जाकर माननीय न्यायालय पेश किया गया। उक्त कार्यवाही में निरी. मनीष कुमार, प्र.आर. शकील खान, तरबेज अली, आर. मनोज, म.आर. सपना यादव की सहायनीय भूमिका रही है।



छात्र-छात्राओं ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली



टीकमगढ़, देशबन्धु। जिले में आगामी निर्वाचन में शत-प्रतिशत मतदान हेतु एवं लोगों को मतदान का महत्व बताने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अवधेश शर्मा के मार्गदर्शन एवं निदेशन में मतदान की गतिविधियां आयोजित की जा रही है। इसी तारतम्य में आज स्कूली छात्र-छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई। मतदाता जागरूकता रैली के दौरान स्कूली छात्र-छात्राओं ने लोकतंत्र में हर वोट कीमती है,

आगामी 17 नवंबर को होने जा रहे चुनाव में मतदान अवश्य करें सारे काम छोड़ दो, सबसे पहले वोट दो, मतदान करने को रहें तैयार, यह हम सबका अधिकार के नारे भी लगाए। साथ ही मतदाताओं को बताया गया कि, जो भी व्यक्ति मतदान करता है उसे खुद ही निर्णय लेना चाहिए किसी के बहकावे में नहीं आना चाहिए, हमारा भारत देश एक लोकतंत्र देश है, जहां हर व्यक्ति नागरिक को अपने वोट का इस्तेमाल करने का अधिकार प्राप्त है।

विधानसभा चुनाव में पुलिस हुई सख्त, भ्रवाया बॉन्डओवर, पालन न करने पर होगी जेल



पलेरा, देशबन्धु। मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज गया है। आगामी 17 नवंबर को मध्य प्रदेश में वोटिंग होगी, तो वही 3 दिसंबर को परिणाम आएंगे। निर्वाचन आयोग ने 9 अक्टूबर को प्रदेश में आदर्श आचार संहिता भी लागू कर दी है। आचार संहिता लागते ही पुलिस- प्रशासन एक्शन मोड में आ गया है। पलेरा थाना पुलिस ने कैंप लगाते हुए लोगों को बॉन्ड ओवर किया है। वहीं पुलिस उन लोगों पर भी नजर रखेगी कि कोई राजनीतिक झंडा, बैनर का उपयोग तो नहीं कर रहा है। शांतिपूर्ण चुनाव के लिए लगातार थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह परिहार अपने दलबल के साथ रोजाना नगर में पैदल मार्च भी निकाल रहे हैं। थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह परिहार ने बताया कि पुलिस के पास ऐसे उपद्रवियों का डटा होता है,

जिनसे शांति भंग होने या किसी भी तरह की अराजकता फैलने का खतरा हो सकता है। इन्हें नियंत्रित करने के लिए बॉन्ड ओवर जैसी कार्रवाई की जाती है। इसी क्रम में पुलिस के द्वारा लगातार लोगों को बॉन्ड ओवर किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बॉन्ड ओवर का मतलब भारतीय दंड संहिता की धारा (122) अंतर्गत अर्थ है कि इसके तहत ऐसे लोग जो शांति भंग कर सकते हैं, उनसे लिखित में सहमति मांगी जाती है कि वे जानबूझकर शांति भंग या ऐसा कोई कृत्य नहीं करेंगे। और यदि वे ऐसा करते पाए जाते हैं तो उन्हें सजा दी जा सकती है। थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह परिहार ने बताया कि विधानसभा चुनाव के चलते अपराधिक मामलों और बढ़ते क्राइम को रोकने के लिए

गुंडे-बदमाशों के ऊपर पुलिस की पैनी नजर है। इसके साथ ही लगातार सड़क छाप गुंडे बदमाशों पर कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने बताया कि निगरानी बदमाशों के ठिकानों पर नजर रखी जा रही है। इसके अलावा पुलिस के द्वारा रोजाना चेकिंग पॉइंट लगाकर वाहनों को चेकिंग की जा रही है। नगर क्षेत्र में अवैध शराब को लेकर भी पुलिस लगातार अपनी कार्यवाही करने में जुटी हुई है। नगर एवं क्षेत्र में संचालित ढाबे पर पुलिस की नजर बनी हुई है। कुल मिलाकर आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद नगर एवं क्षेत्र में आदर्श आचार संहिता का पालन करने एवं त्योहारों के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने की समझाइश पुलिस ने दी है।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने की संभाग में चुनाव तैयारियों की समीक्षा

- ◆ संभाग के 6 जिलों में सात हजार से ज्यादा मतदान केंद्रों पर, साठ लाख से अधिक मतदाता करेंगे मतदान।
- ◆ निर्वाचन प्रक्रिया में ई-चालान का उपयोग कराएँ।
- ◆ मतदान कर्मियों को ईवीएम, वीवी पैट का अधिक से अधिक प्रशिक्षण दें।
- ◆ सख्ती के साथ आदर्श आचार संहिता का पालन कराये।
- ◆ सुरक्षा के दो प्लान तैयार करें।
- ◆ डाक मतदान के पात्र मतदाताओं को समय सीमा में आवश्यक जानकारी दे।
- ◆ निष्पक्ष और शांतिपूर्वक मतदान के लिए आवश्यक तैयारी करें।

सागर, देशबन्धु। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश पर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, मप्र अनुपम राजन द्वारा संभाग की समीक्षा बैठक निवाड़ी जिले के ओरछा में संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षकों की मौजूदगी में विधानसभा चुनाव 2023 की तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की। बैठक में निर्देशित किया गया कि निर्वाचन प्रक्रिया में ई-चालान का उपयोग कराएँ, सुरक्षा की दृष्टि से दो प्लान तैयार करें, मतदान कर्मियों को ईवीएम, वीवी पैट का अधिक से अधिक प्रशिक्षण दें, साथ ही सख्ती के साथ आदर्श आचार संहिता का पालन कराएँ। उन्होंने कहा कि सुरक्षा के दो प्लान तैयार करें। डाक मतदान वाले पात्र व्यक्तियों को डाक मतदान करने की जानकारी समय सीमा में प्रदान करें। मतदाता सूची में डुप्लीकेशन न हो। उल्लेखनीय है कि सागर संभाग के 6 जिलों में सात हजार से ज्यादा मतदान केंद्रों पर साठ लाख से अधिक मतदाता मतदान करेंगे। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने निर्देश दिए कि मत लोगों के नाम सूची में न रहे। जिन मतदाताओं के नाम सूची में जोड़े गए हों उनके ईपिक कार्ड वितरित किए जाएँ। सभी रिटर्निंग आफिसर अपने क्षेत्र के मतदान केंद्रों का भ्रमण कर लें और मतदान केंद्रों पर सभी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करें। जिन मतदान केंद्रों में 1500 से अधिक मतदाता हैं ऐसे मतदान केंद्रों को मतदाता की सुविधा के लिए दो भागों में विभक्त किया जाए और नया मतदान केंद्र उसी परिसर में या निकटवर्ती



भवन में बनाया जाए। मतदान केंद्र पर मतदान कराने के लिए आने वाले मतदान दल और सुरक्षाकर्मियों की सुविधाओं का ध्यान रखा जाये, जिससे उनका मतदान कराने में अच्छा अनुभव रहे। अनुपम राजन ने सागर जिले की चांदी एवं राशि पकड़ने की कार्यवाही की सराहना की एवं कहा कि सभी जिले इस तरह की कार्यवाही करें। इसी प्रकार सागर के स्वीप प्लान के तहत की जा रही गतिविधियों की भी सराहना की। स्वीप की गतिविधियों का एक वीडियो कलेक्टर दीपक आर्य के माध्यम से देखा। श्री राजन ने निर्देश दिए कि तत्काल अंतर्राज्यीय एवं अंतर जिला बार्डर पर नाका प्रारंभ करें जिससे कार्यवाही प्रारंभ की जा सके। चुनाव कार्य में लगने वाले कर्मचारियों, 80 वर्ष से अधिक की आयु के वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों एवं कोविड से अत्यधिक पीड़ित रहे व्यक्तियों के लिए बैलेट की तैयारी अच्छी तरह से की जाये। बीएलओ को भी पता होना चाहिए कि किन मतदाताओं को पोस्टल बैलेट की सुविधा दी जाना है। चुनाव आचार संहिता का कड़ाई से पालन किया जाये। सोशल मीडिया बंदर की कार्यवाही करें। चुनाव को प्रभावित करने वाली सामग्री की रोकथाम के लिए जिले में और राज्य की सीमाओं में नाके लगाकर वाहनों की सख्ती से जांच की जाये। मंदिरा के अवैध निर्माण और परिवहन पर सख्त

कार्यवाही करें। फ्लाइंग स्कॉड और एसएस्टी द्वारा सुस्तैदी से काम करें। चुनाव संबंधी शिकायतों के लिए बनाए गये सी.विजिल मोबाइल एप का व्यापक प्रचार करें। वल्लरबल क्षेत्र के मतदान केंद्रों में सुरक्षा के इंतजाम करने के साथ ही मतदाता जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिये गए। श्री राजन ने कहा कि बुंदेलखंड संवेदनशील क्षेत्र है, एनसीसी का आदर्श आचार संहिता का पालन पूरी निष्पक्षता ईमानदारी के साथ करें। मीडिया सर्टिफिकेशन एवं मानिटरिंग कमेटी अनुमतिियों का परीक्षण करके ही अनुमति प्रदान करें। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक सुरक्षा श्री अनुराग ने कहा कि सुरक्षा एवं फोर्स के लिए दो प्लान तैयार करें, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके, वाहनों की व्यवस्था भी अतिरिक्त रूप से रखी जाये स्थायी वारंटियों, माफिया एवं आदतन अपराधियों की सूची तैयार करें। संभागायुक्त डॉ. वीरेंद्र सिंह रावत ने कहा कि आबकारी विभाग, पुलिस एवं राजस्व विभाग के समन्वय से अधिक से अधिक कार्रवाई सुनिश्चित करें एवं जेयर हाउस का समय-समय पर निरीक्षण करें। संभाग में 26 विधान सभाओं में सात हजार 63 मतदान केंद्रों पर कुल मतदाता साठ लाख 44 हजार 956 में से पुरुष मतदाता 31 लाख 79 हजार 130, महिला मतदाता 28 लाख 65 हजार 774 एवं अन्य मतदाता 65 अपने मतदान का प्रयोग करेंगे। बैठक में शामिल सभी कलेक्टर और पुलिस अधीक्षकों द्वारा अपने जिले में निर्वाचन के लिए की गई तैयारियों की जानकारी दी गई।

बीएमसी में भर्ती कैंसर से ग्रसित मरीज ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

वाई नंबर 22 के पास सीढ़ियों की रैलिंग से लटकता मिला शव

सागर, देशबन्धु। बुन्देलखण्ड चिकित्सा महाविद्यालय सागर में शनिवार को अस्पताल के 22 नंबर वार्ड में मरीज द्वारा वार्ड 22 के निकट बनी सीढ़ियों से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। प्राप्त जानकारी अनुसार अस्पताल के वार्ड नंबर 22 के पलंग नंबर 28 पर मरीज हज्जू पिता मलखान पटेल उम्र 37 वर्ष बंडा कैंसर बीमारी से पिछले डेढ़ दो साल से ग्रसित थे। जिनको मुंह का एडवॉन्स स्टेज का कैंसर था। जिनका भोपाल में भी इलाज चला एवं भोपाल के अस्पताल में ऑपरेशन भी हुआ था। मरीज की स्थिति एडवॉन्स स्टेज का कैंसर होने के कारण गंभीर थी। उक्त मरीज बीएमसी में पिछले 3-4 महीने में कई बार आकर भर्ती रहकर इलाज कराता रहा है। भर्ती रहने के दौरान अस्पताल में पदस्थ चिकित्सक कैंसर रोग विशेषज्ञ द्वारा उचित देखरेख जांच व इलाज प्रदान किया तथा किये गये उपचार से मरीज व मरीज के परिजन पूर्ण रूप से संतुष्ट थे। वर्तमान में 11 अक्टूबर को अस्पताल के वार्ड 22 के पलंग नंबर 28 पर भर्ती हुआ। जानकारी अनुसार शनिवार को प्रातः 05.30 बजे से 6 बजे के



बीच वार्ड 22 के पास बनी सीढ़ियों के उपर वाले हिस्से पर पहुंचकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना प्राप्त होने पर अस्पताल प्रबंधन द्वारा आत्महत्या स्थल पर पहुंचकर उक्त घटना के संबंध में बीएमसी चौकी, थाना गोपालगंज को सूचित किया गया। पुलिस द्वारा मृतक को फंदे से उतारकर पोस्टमार्टम के लिये बीएमसी मरच्युरी में पहुंचा दिया। जिसका प्रातः 10 बजे से 11 बजे के आसपास परिजन व पुलिस की उपस्थिति में पोस्टमार्टम कर मृत शरीर को परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया।

सड़क दुर्घटना में आर्मी जवान एवं पत्नी की मौत

सागर, देशबन्धु। देवरी-रहली थाने की सीमा पर तेज रफ्तार डंपर ने बलेनो कार में टकरा मार दी जिसमें पति-पत्नी की मौत हो गई जानकारी के अनुसार उमेश कुशवाहा उम्र 26 वर्ष से रोशनी कुशवाहा उम्र 22 वर्ष पत्नी को लेने ससुराल रहली थाना जिला सागर के ग्राम पटना से अपने घर ठेमी जिला नरसिंहपुर जा रहे थे। रास्ते में रहली मार्ग पर ग्राम परसिया के पास तेज रफ्तार डंपर ने टकरा



मार दी जिसमें रोशनी कुशवाहा की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। जबकि कार में फंसे उमेश कुशवाहा को बड़ी मशकत के साथ निकाला गया। उन्हें गंभीर अवस्था में हंड्रेड डायल द्वारा देवरी स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जहां पर उपचार की दौरान जिला चिकित्सालय रेफर किया गया जहां रास्ते में ही उमेश की मौत हो गई उमेश अजमेर में आर्मी में पोस्टिंग है।

पंचवालयति मंदिर के पंच कल्याणक हेतु पात्र चयन 19 को

सागर, देशबन्धु। पंचवालयति दिगंबर जैन मंदिर के पंचकल्याणक महोत्सव हेतु पात्रों का चयन 19 अक्टूबर को होने जा रहा है। मुनिश्री अजित सागर एवं मुनिश्री निर्दोष सागर के संसंध सानिध्य में आगामी 27 नवम्बर से 2 दिसंबर तक आयोजित पंचकल्याणक जिनविंव प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रतिष्ठानार्थ संयोज भैया मुरैना होंगे। महोत्सव की तैयारियों को लेकर समितियों का गठन कर दिया गया है, साथ ही महोत्सव की रूपरेखा हेतु मनोनीत पदाधिकारी एवं संयोजकों की बैठक भी रखी गई। आगामी 19 अक्टूबर को जिनालय में सुबह अभिषेक पूजन के उपरांत सुबह 8 बजे से मुनि संघ के सानिध्य में पात्रों का चयन किया जावेगा। पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन मंदिर के समीप ही किया जा रहा है।

निःशुल्क शतरंज प्रशिक्षण आज

सागर, देशबन्धु। रोटीर क्लब ऑफ सागर के रोटीर कम्युनिटी कॉर्प आरसीसी के द्वारा रोटीर कम्युनिटी कॉर्प आरसीसी शतरंज प्रशिक्षण आज सुबह 9 बजे कांची रेस्टोरेट सिविल लाइन में किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण हर रविवार को सुबह 9 से 11 निःशुल्क शतरंज खेल खेला जाएगा और प्रशिक्षण बालकृष्ण जैसवाल सेवानिवृत्त प्रिंसिपल डिग्री कॉलेज सागर के मुख्य आतिथ्य में दिया जाएगा। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य शतरंज में बच्चों की दिलचस्पी बढ़े और जिससे उनके खेल के स्तर में बढ़ोतरी हो एवं आगामी 5 वर्षों में सागर के छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हो सके।

नवरात्रि के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सिंह एसोसियेट्स की अनुपम प्रस्तुति

सागर वैली

राजघाट रोड - 9425469141

इंजी. एस.आर.सिंह

प्राइम लोकेशन में

प्लॉट, मकान एवं फार्म हाऊस उपलब्ध

नोट : समस्त शासकीय अनुमतियां • चौड़ी कॉन्क्रीट सड़क, • विद्युत व्यवस्था • हरे-भरे पार्क • फार्नेस सुविधा • सीसीटीवी कैमरे

सर्वोदय नगर

उपवर्ग सहित पूर्ण विकसित कॉलोनी

खुरई रोड, बीना - 8357044343

1 BHK, 2 BHK

मकान एवं प्लॉट उपलब्ध

विशेषताएं : चौड़ी सड़क, हरे-भरे पार्क बिजली व्यवस्था कम्पलीट जैन मंदिर एवं हिंदू मंदिर हेतु प्लॉट आरक्षित

पूर्ण जानकारी हेतु सर्वोदय नगर टॉपिंग पर की विजिट अवसर करें संपर्क करें : 9425469141, 9301622342

singh.associates1966@gmail.com

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं शारदीय नवरात्र प्रारंभ पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अजहरुद्दीन काजी (अन्नू)

(ठेकेदार)

समाजसेवी मस्जिद वार्ड, बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं शारदीय नवरात्र प्रारंभ पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजीव रिघारिया

'A' क्लास कॉन्ट्रैक्टर म.प्र. वि. मं., बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं शारदीय नवरात्र प्रारंभ पर हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमति ज्योति दुबे

प्रदेश उपाध्यक्ष

भाजपा महिला मोर्चा भोपाल

9713445286

वैभव दुबे

प्रदेश कार्यसमिति सदस्य

भाजपा युवा मोर्चा

9424450401

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं शारदीय नवरात्र प्रारंभ पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रिंस वूट हाऊस

स्थान : बगुई बजरिया, बीना

मो. समद खान M. 9425191514

(उपाध्यक्ष) बकक जामा मस्जिद कमेटी बगुई बजरिया बीना अध्यक्ष - गृह एसोसिएशन व्यापार संघ, बीना

केम्पस, लखानी, कोलम्बस रिबोक, एडिडास, नाईकी स्पोर्ट्स शू, वूडलैंड, रेड चीफ, ऐरी सेप्टी शू, जेन्ट्स फेंसी, सैन्डल शू एवं चप्पल के विश्वसनीय विक्रेता

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं नवरात्रि पर्व के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डालचंद पटेल

समाजसेवी / संचालक कॉमर्स कोचिंग

क्लासेस प्रताप वार्ड, बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा का हार्दिक अभिनंदन करते हैं

श्री बालाजी टायर रिमोल्डिंग

12.4.28, 13.6.28, 14.9.28, 16.9.28, 9.16, 1000.20 एवं सफ़्तन कार्टर के टायरों की मरम्मत एवं ठीकी रिमोल्डिंग उत्तम क्वालिटी की टायरों द्वारा मरम्मत की जाती है

रिमोल्ड टायर

उचित रेट पर गारंटी के साथ बेचे जाते हैं

प्रो.पंकज ताम्बर मो.: 9893310620

स्थान - पुराने मडिन्द्रा कर्वरॉप के पास, आगासोद रोड, बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं नवरात्रि पर्व के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. एन. के. पाण्डेय

(MBBS, MS)

07580-225056

24 घंटे आपतकालीन सुविधा

धन्वन्तरी हॉस्पिटल

एण्ड डायग्नोस्टिक सेन्टर

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं नवरात्रि पर्व के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

तिरुमुरगन द्यूबवैल

खुरई रोड, होटल साहनी, बीना

प्रो.-बृजेन्द्र सिंह राजपूत

खिरिया वार्ड, बीना

मो.- 9754139100, 9039844311

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा का हार्दिक अभिनंदन करते हैं

सिटी हॉस्पिटल

विशेषज्ञ हृदय, टी.बी. एवं फेफड़ा एवं नाक, कान, गला रोग

डॉ. पी.डी. साहू MBBS, DTC

डॉ. श्रीमति जयश्री साहू MBBS, MS (ENT)

सिटी हॉस्पिटल, खुरई रोड, पुष्पविवर कॉलोनी बीना

Mob. - 9575616461, 9893730842

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा का हार्दिक अभिनंदन करते हैं

होम्यो क्लीनिक एण्ड हेल्थ केयर सेन्टर

यहाँ आपके समस्त रोगों का उपचार होम्योपैथिक द्वारा सरलता से किया जाता है।

डॉ. कविन्द्र बिलगैया

B.H.M.S.

(मो.-9893036832)

समय : सुबह 10 से 2 बजे शाम 6 से 9 बजे

स्थान : आचल पेट्रोल पम्प के पास, आचल वार्ड, बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा नवरात्रि पर्व के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सुरेन्द्र यादव

एडवोकेट

हनीफ खान

(हनु) कबाड़ी

एम.एस. कॉम्प्लेक्स, स्टेशन रोड बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा का हार्दिक अभिनंदन करते हैं

नवरात्रि पर्व के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

कमली राय

(युवा भाजपा नेता)

राजीव राय

(युवा भाजपा नेता)

सोजन्य - कमली राय मित्र मंडली बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं नवरात्रि पर्व के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

इरफान खान

(बेटी वाले)

समाजसेवी

आगासोद रोड, बीना

माँ जागेश्वरी शोभायात्रा एवं नवरात्रि पर्व के शुभ अवसर पर सभी नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अशोक दुबे

(मामू)

बीना जिला सागर म.प्र.